वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

2.4

सूचना पत्र

International Sociological Association

चीनी समाजशास्त्र किस तरफ?

लिपिंग सन

समाजशास्त्र एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति

राबर्ट वान क्राईकन
वेदात मिलर

लेटिन अमेरिका में हिंसा एवं प्रतिरोध

जोहाना परा
नादिया रोड्रिग्ज
मिल्टन विडाल

- बेरुत में कार्यकारिणी की बैठक
- जोहान्सबर्ग में पीएच.डी. प्रयोगशाला
- समाजशास्त्रीय यात्राएँ
- अरब विद्रोह
- एक अथवा अनेक समाजशास्त्र ?
- हमारे ईरानी सम्पादक
- फ्रांसीसी–भाषायी समाजशास्त्र का विश्व में स्थान
- इतिहास का कोना–
  लेखागार से ए.आई.एस.एल.एफ. पर कुछ और प्रकाश
- भारतीय समाजशास्त्र परिषद के समक्ष चुनौतियां
- अंकारा विश्वविद्यालय में लोक समाजशास्त्र

अंक 2 / क्रमांक 4 / मई 2012

GDN

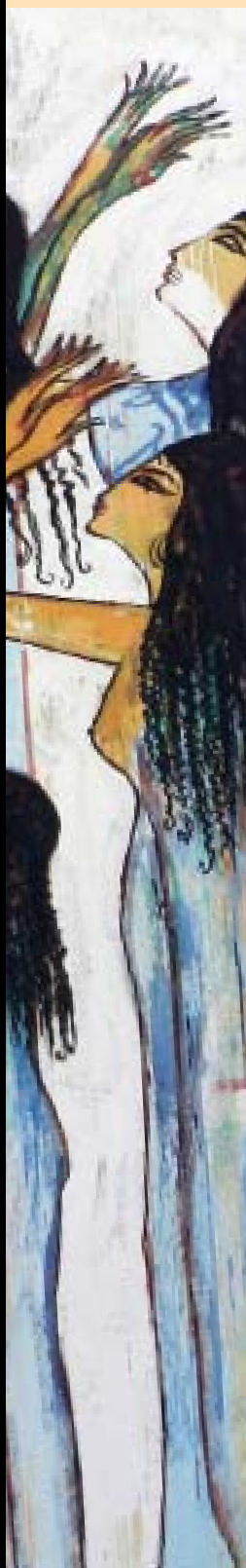

> सम्पादकीय

आईएसए-ऑन-लाईन – समाजशास्त्र का भविष्य

वैश्विक संवाद अपने द्वितिय वर्ष में चल रहा है। हमनें 8 से 30 पेजों का, 5 से 13 भाषाओं में, एक नियत रीति के नमूने से लेकर खास डिजाइन तक, एक सूचना पत्र से लेकर एक पत्रिका तक बढोतरी की है। इसकी उपलब्धता इलेक्ट्रोनिकल है –– हालांकि मैं जहां भी जाता हूं मेरे थैले इसकी सम्बन्धित भाषा में छपी हुई प्रतियों के वजन से भरे होते हैं। यह विश्व घटनाक्रम को एक समाजशास्त्रीय दृष्टि प्रदान करता है साथ ही आईएसए मे होने वाली घटनाओं कॉन्फ्रेन्सेज, समाजशास्त्रीय चर्चाओं, विशेष स्तम्भों, राष्ट्रीय समाजशास्त्रों के नवीनीकरण तथा और भी बहुत कुछ का भण्डार है। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण वह संवाद है जो कि यह अपने अनुवादकों के दलो के मध्य उपस्थित करता है। उदाहरण के लिए इस अंक में लोक समाजशास्त्र लेबोरेटरी, वारसा के युवा तथा उत्साही सदस्य बतलाते हैं कि उन्होनें वैश्विक संवाद के पॉलिश संस्करण को प्रारम्भ करने के लिए सम्मेलन का आयोजन किया – एक सम्मेलन जिसमें कि वैश्विक संवाद के वैश्विक तथा सार्वभौमिक चरित्र पर विस्तार से चर्चा की गई। इस प्रकार एक नतीजे के रुप में हम देखते हैं कि युवा समाजशास्त्रिसें का आपस में सम्बद्ध दलों का तन्त्र विकसित हुआ है जो कि विश्व समाजशास्त्र पर अपने विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

अपनी वैश्विक यात्रा के दौरान पब्लिक सोशियोलोजी, लाईव! भी एक ऐसे ही सिद्धान्त द्वारा शासित की जा रही है। यहां प्रतिभाशाली समाजशास्त्रियों का एक दल जो कि उन देशों की गहन समझ रखनें वाला है जहां वे रह रहे हैं तथा शोधरत हैं, अपनी संलग्नताओं के अनुभवों को बर्कले के उत्सुक अण्डरग्रेजुएटस से साझा करता है। स्काईप का प्रयोग करने से उन अति–समर्पित लोक समाजशास्त्रियों को अपने अध्ययन को छोडनें की आवश्यकता नहीं पडती। उनकी बातचीत का रिकार्ड आईएसए की वैबसाईट पर अंकित कर दिया जाता है जहां से कोई भी इन्टरनेट के द्वारा इनको देख सकता है: http://www.isa-sociology.org/public-sociology-live/. विशेषतौर पर यह बार्सिलोना, तेहरान, जोहान्सबर्ग, साओ पावलो, कीव, तथा ओस्लो के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के दलों द्वारा देखा जाता है जो कि अपने विचार विमर्श के साराशों को फेसबुक पर अंकित कर देते हैं जिसकी वजह से और अधिक परिचर्चा तथा वादविवाद के अवसर उत्पन्न होते हैं इस प्रकार हम कुछ केन्द्रों, प्रयोगशालाओं, तथा संस्थानों को निर्मित करते हैं जो कि दूसरों से जुड कर अपने बारे में अध्ययन करते है तथा अपनी विविधताओं के द्वारा एक दूसरे से बद्ध वैश्विक समाजशास्त्रियों के समुदायों का पोषण करते हैं।

सामाजिक संचार माध्यम आमने–सामने की बातचीत की तीव्रता को अधिक समृद्ध कर सकते हैं, तथा इसी प्रकार इस बातचीत को वैश्विक श्रोताओं के लिए उपलब्ध भी करवा सकते हैं। इस अंक में वर्णित दृष्य श्रृंखला 'जर्नीज थ्रू सोशियोलोजी' में विश्व के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए आईएसए कार्यकारिणी के सदस्यों से लालेह बहबेहनियन पूछती है कि उन्हें समाजशास्त्र में लाने वाले कारक क्या हैं तथा उनकी समाजशास्त्रीय यात्रा के दौरान उन्होंने किन चुनौतियों का सामना किया। आईएसए के अधिकतर सदस्यों को अपने नेतृत्व को सुनने तथा देखने का अवसर शायद ही कभी प्राप्त हो लेकिन अब वे उनके माउस के एक क्लिक पर उपलब्ध हैं। यह एक उदाहरण है कि सैद्धान्तिक रुप से विश्व के किसी भी हिस्से मे बैठकर क्या कुछ किया जा सकता है, एक आदर्श प्रारुप है जिसे अन्य लोग भी अपना सकते है, बदलाव तथा सुधार कर सकते हैं। इन्टरनेट शिक्षा के स्तर को गिरा सकता है तो यह शिक्षा मे वृद्धि भी कर सकता है, यह संप्रेषण को कमजोर कर सकता है लेकिन यह उसको समृद्ध भी कर सकता है। हम जहां तक इन्टरनेट को नियंत्रित कर सकते है उसी के साथ हम यह भी तय कर सकते हैं कि इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाए।

वैश्विक संवाद एक वर्ष में पांच बार तथा 13 भाषाओं में प्रकाशित होता है। यह आईएसए वैबसाइट पर उपलब्ध है। प्रविष्ठियां माइकल बुरावे को burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

चीनी समाजशास्त्र किस तरफ? *इस साक्षात्कार में अग्रणी चीनी बुद्धिजीवी एवं समाजशास्त्री लिपिंग सन चीन के सार्वजनिक जीवन में समाजशास्त्र के स्थान का वर्णन करते हैं तथा यह स्पष्ट करते हैं कि चीन क्यों गतिहीनता की और अग्रसर हो रहा है।*

अकादमी का प्रतिष्ठिकरण। *रार्बट वान क्राइकेन लिखते है कि किस प्रकार अकादमिक जगत पर विशिष्ट व्यक्तियों ने धावा बोल रखा है तथा हालिवुड आधारित एक सितारा व्यवस्था को जन्म दिया है जिसके तहत जीतने वाला सब कुछ ले जाता है एवं एक विद्वतापूर्ण कार्य को क्षयकारी मार्का प्रदान कर दिया जाता है ।*

समाजशास्त्र के प्रोफेसर से पाकशास्त्र गुरु की ओर। *क्या अन्य पेशे की तलाश है? टर्किश समाजशास्त्री वेदात मिलर हमें बतला रहे हैं कि वो किस प्रकार टीवी के व्यस्त समय (प्राइम टाइम) पर प्रसारित पाककला शो के माध्यम से संप्रदायगत अनुयाईओं के साथ एक टेलीविजन हस्ती बन गये।*

> Editorial Board

Editor:
Michael Burawoy.

Managing Editors:
Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Pedro Mancini, Fabio Silva Tsunoda, Célia da Graça Arribas, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Shahrad Shahvand, Fatemeh Moghaddasi, Saghar Bozorgi, Nastaran Mahmoudzadeh, Najmeh Taheri, Tara Asgari Laleh, Milad Rostami.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Takako Sato, Shohei Ogawa, Tomoyuki Ide, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Jakub Rozenbaum, Michał Chełmiński, Emilia Hudzińska, Julia Legat, Adam Muller, Wojciech Perchuć, Anna Piekutowska, Anna Rzeźnik, Konrad Siemaszko, Zofia Włodarczyk.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Mustafa Aykut Attar.

Media Consultants:
Annie Lin, José Reguera.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: आईएसए-ऑन-लाईन – समाजशास्त्र का भविष्य **2**

चीनी समाजशास्त्र किस तरफ?
चीन के लिपिंग सन से साक्षात्कार **4**

> प्रतिष्ठित व्यक्ति

अकादमी का प्रतिष्ठिकरण
राबर्ट वान क्राईकन, आस्ट्रेलिया **6**

समाजशास्त्र के प्रोफेसर से पाकशास्त्र का गुरू बनना
वेदात मिलर, टर्की **8**

> लेटिन अमेरिका में हिंसा एवं प्रतिरोध

पन्नों की हिंसा
जोहाना परा, कोलम्बिया **11**

कोलम्बिया में भूमि मुआवजा
नादिया रोड्रिग्ज, कोलम्बिया **13**

चिली में छात्र आंदोलन
मिल्टन विडाल, चिली **15**

> आई.एस.ए. में क्या घट रहा है?

बेरुत में कार्यकारिणी की बैठक, 2012
माइकल बुरावे, अमेरिका **17**

पीएच.डी. प्रयोगशाला, नवम्बर 2011
टीना उईस, दक्षिण अफ्रीका **20**

समाजशास्त्रीय यात्राएँ
लालेह बहबेहनियन **21**

> सम्मेलन

अरब विद्रोह
अमीना अराबी और जूलियन युरगेनमेयर, लेबनान **23**

एक अथवा अनेक समाजशास्त्र : एक पॉलिश संवाद
मिकोलज मिरजेजेवस्की, केरोलिना मिकोलाजेवेस्का एवं जेकब रोजेनबाम, पौलेण्ड **25**

> विशेष स्तम्भ

सम्पादकों से परिचय: ईरानी दल
रेहाने जवादी, ईरान **27**

फ्रांसीसी-भाषायी समाजशास्त्र का विश्व में स्थान
आन्द्रे पेतितात, स्विट्जरलैण्ड **28**

इतिहास का कोना – लेखागार से ए.आई.एस.एल.एफ. पर कुछ और प्रकाश
जेनिफर प्लाट, यू.के. **30**

> विभिन्न क्षेत्रों से

भारतीय समाजशास्त्र परिषद के समक्ष चुनौतियां
ईश्वर मोदी, भारत **31**

अंकारा विश्वविद्यालय में लोक समाजशास्त्र
गुन्नुर अरटोंग और योन्का ओडाबास, टर्की **32**

भविष्यों का लोकतान्त्रिकरण
मार्कस एस. शुल्ज, अमेरिका **33**

> चीनी समाजशास्त्र किस तरफ?

लिपिंग सन से साक्षात्कार

यह साक्षात्कार वैश्विक संवाद (ग्लोबल डायलाग) के लिए माइकल बुरावे द्वारा प्रोफेसर युआन शेन, लीना हू और जियुइंग चेंग की मध्यस्थता की मदद से लिया गया। लिपिंग सन आज चीन के अग्रणी सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं। वे सिंग्हुआ विश्वविद्यालय, बीजिंग में समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं।

अग्रणी चीनी समाजशास्त्री लिपिंग सन संक्रमण जाल के बारे में एक प्रमुख बात बतलाते हुए।

मा. बु.: हाल ही में आपने चीनी विकास के गतिरोध या ठहराव या फिर जिसे आप ''संक्रमण जाल'' कहते हैं, के बारे में लिखा है। आप का ''संक्रमण जाल'' से क्या तात्पर्य है?

लि. स.: संक्रमण जाल का इशारा सुधार प्रक्रिया में हितों की निहितता, जो आगे सुधार को रोकते हैं की तरफ है। वे व्यक्ति जो एक बार लाभ प्राप्त कर चुके हैं, यथा स्थिति बनाये रखना चाहते हैं। वे संस्थागत स्वरूपों को उनकी संक्रमणकालीक विशेषताओं के साथ जमाना और ''मिश्रित संस्थाओं'' की स्थापना करना चाहते हैं जो उनके हितों को बढ़ायेगी। यह सभी सामाजिक–आर्थिक विकास को विकृत कर आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के संग्रह की ओर ले जाता है। सोवियत रूस और पूर्वी–यूरोप की तुलना में, चीनी संक्रमण को सीढी–दर–सीढी मॉडल के रूप में देखा जा सकता है। यहीं पर समस्या है क्योंकि इस सुधार प्रक्रिया की प्रारंभिक सफलता ने अपनी ही बाधाएँ खड़ी कर ली हैं।

मा. बु.: आप का इससे क्या विशिष्ठ तात्पर्य है?

लि. स.: चीन की आर्थिक सफलता सभी प्रकार के संसाधनों पर राज्य का एकाधिकार एवं इसकी मजबूत प्रशासनिक क्षमता के द्वारा सुनिश्चित की गई थी। आर्थिक विकास का यह विशिष्ट मॉडल भ्रष्ट अफसरों द्वारा ''किराया लेने वाले राज्य'' पर आधारित था। इस शक्तिशाली नौकरशाही के विस्तार ने ''कानून के शासन'' के अन्तर्गत चलने वाली वास्तविक बाजार अर्थ–व्यवस्था की तरफ संक्रमण को बाधित किया है।

मा. बु.: आप चीन के जाने माने सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं। यह आपके लिए क्या अर्थ रखता है? यथार्थ में आप विभिन्न श्रोताओं में समाजशास्त्र का किस प्रकार प्रसार करते हैं? आप अपने लोक समाजशास्त्र से कैसे प्रभावित होते हैं?

लि. स.: ''पारंपरिक'' समाजशास्त्र और ''लोक'' समाजशास्त्र में निम्न रूप से अंतर देखा जा सकता है। पारंपरिक समाजशास्त्र की प्रमुख रूचि सामाजिक जीवन के बारे में ज्ञान का उत्पादन है।

हालाँकि यह ज्ञान समाज को भी प्रभावित करेगा, परन्तु ऐसा अप्रत्यक्ष एक अनपेक्षित परिणाम के रूप में ही होता है। इसके विपरीत लोक समाजशास्त्र भी हालाँकि ज्ञान का उत्पादन करता है परन्तु इसकी प्रमुख रूचि समाज को प्रभावित करना है। राबर्ट मर्टन के शब्दों में, पारंपरिक समाजशास्त्र का प्रकट प्रकार्य ज्ञान का उत्पादन है और अप्रकट प्रकार्य समाज को प्रभावित करना है। लोक समाजशास्त्र इसके बिल्कुल विपरीत है।

दोनों प्रकार के समाजशास्त्र का अंतर शोध विषयों के चुनाव और निष्कर्ष निकालने के तरीकों से व्यक्त होता है। जब हम चीन में शोध के विषय का चुनाव करते हैं तो सबसे महत्वपूर्ण समस्याएँ जिनका हल चाहिए, को प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, संक्रमण काल के दौरान सामाजिक संरचना में परिवर्तन, सामाजिक विरोधाभासों और संघर्षों, संक्रमण जाल इत्यादि पर हमारे शोध कार्य हैं। हमारा लक्ष्य स्पष्ट हैः ऐसे निष्कर्षों पर पहुँचना जो मुद्दो की सामाजिक समझ और सरकार की नीति निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित करेंगे।

प्रभाव के तीन मुख्य माध्यम हैं : शैक्षणिक पत्रिकाओं में शैक्षणिक लेख छपाना ताकि विषय की दिशा को प्रभावित किया जा सके; सार्वजनिक मीडिया में भाषण देना (ट्विटर जैसे सामाजिक मीडिया सहित) ताकि सार्वजनिक समझ प्रभावित हो; विषय–विशिष्ट शोध रिपोर्ट का लेखन और समाचार मीडिया एवं सामाजिक मीडिया में इनके प्रकाशन के माध्यम से सरकार को प्रभावित करना। हालाँकि आम तौर पर हम प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सक्रियता में संलग्न नहीं होते हैं।

मा. बु.: समकालीन चीन में समाजशास्त्र की भूमिका या प्रकार्य को आप कैसे देखते हैं?

लि. स.: चूंकि चीन नाटकीय सामाजिक परिवर्तन वाला एक संक्रमणशील समाज है, इसलिए समाजशास्त्र का सार्वजनिक जीवन पर अधिक गहरा प्रभाव है। इस समय में, समाजशास्त्र दोनों सार्वजनिक चिन्तन और सरकारी नीतियों को प्रभावित कर सकता है। अतः समाजशास्त्रियों द्वारा विकसित औद्योगिकरण के विभिन्न मॉडल जैसे नगर एवं ग्राम उद्यम (TVEs) और ग्रामीण एवं नगरीय विकास के एकीकरण के बारे में दिये गये सुझाव स्थानीय स्तर पर सरकार द्वारा प्रायोजित नीतियाँ बन गये। समाजशास्त्रियों द्वारा प्रस्तावित सैद्धान्तिक अवधारणाएँ जैसे 'समुदाय' कार्य ईकाई व्यवस्था के विखण्डित होने के पश्चात सरकारी नीतिगत प्रलेखों एवं सार्वजनिक जीवन में सूचित व्यवहारों के नारे बन गये।

मा. बु.: वर्तमान में चीनी सार्वजनिक बुद्धिजीवी की क्या दुविधाएँ हैं? क्या ऐसा कुछ है कि जिसके उपर आप लिख या बात नहीं कर सकते? या फिर आपके पास संवेदनशली मुद्दों की प्रवंचना के विशिष्ट तरीके हैं? राज्य के आलोचक हो कर आप कैसे जीवित रहते हैं?

लि. स.: चीन के वर्तमान हालातों में, सार्वजनिक मामलों में बोलने वाले को वास्तव में कई सीमाओं का सामना करना पड़ता है। हालाँकि इसी समय यह भी उल्लेखनीय है कि सार्वजनिक बुद्धिजीवियों के लिए गुंजाइश (space) आपकी कल्पना से कहीं ज्यादा बडी है। कई सार्वजनिक मुद्दे प्रत्यक्ष रूप से संबोधित किये जा सकते हैं। कुछ संवेदनशील मुद्दे भी ''कुशल मिथ्या विवरणों'' (tactful twists) के माध्यम से व्यक्त किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, इतिहास की बात कर यथार्थ की बात की जा सकती है या फिर सोवियत रूस एवं पूर्वी यूरोप के बारे में बात कर चीन के बारे में बात की जा सकती है, इत्यादि। इंटरनेट, ब्लॉग और ट्विटर के आने के बाद से कुछ संवेदनशील मुद्दों पर प्रतयक्ष रूप से चर्चा करने की गुंजाइश का काफी विस्तार हुआ है क्योंकि इस प्रकार के नये मीडिया पर नियन्त्रण थोड़ा ढ़ीला है। मैं यहाँ पर यह भी जोड़ना चाहता हूँ कि समाजशास्त्र की वस्तुनिष्ठता और प्रमाण पर इसका केन्द्रित होना, अन्य शब्दों में इसके वैज्ञानिक चरित्र ने सार्वजनिक मुद्दों पर खुल कर बात करने की गुंजाइश को विस्तृत करने में मदद की है।

मा. बु.: आप समाजशास्त्र से कैसे जुड़े? मुझे मालूम है कि आपने कृषकों के साथ मौखिक ऐतिहासिक परियोजनायें करने पर काफी समय व्यतीत किया है। इस तरह के समाजशास्त्रीय अनुसंधान से आपने क्या सीखा?

लि. स.: मैं मीडिया का छात्र था और फिर कॉलेज में मैंने बड़ी कक्षाओं में समाजशास्त्र पढ़ना शुरू किया। यह वह समय था जब चीन में 30 वर्षों तक परित्याग करने के बाद समाजशास्त्र का पुनर्निर्माण किया जा रहा था। अस्सी के दशक में मेरी शोध की प्रमुख रूचि आधुनिकीकरण में थी क्योंकि उस समय चीनी समाज मे वह केन्द्रीय विषय था। मेरा मौखिक इतिहास द्वारा ग्रामीण इलाकों का अध्ययन 1996 में शुरू हुआ। इसका उद्देश्य ग्रामीण समाज पर सूचना एकत्रित कर कृषकों के दैनिक जीवन और उनके जीवन में ''व्यवहार के साम्यवादी तर्क'' को समझना था। हम चीनी बाजार के सुधारों का 'सभ्यता संक्रमण' की प्रक्रिया के रूप में विश्लेषण करना चाहते थे, एक ऐसी प्रक्रिया जो रोजमर्रा व्यवहार में स्थित सामाजिक जीवन का संगठन करती है। इसी कारण से मैं कृषकों से क्रांतिकारी काल में उनके अनुभवों पर साक्षात्कार लेने ग्रामीण इलाकों में गया था।

मा. बु.: आपने विगत 30 वर्षों में समाजशास्त्र में क्या परिवर्तन देखे हैं? चीनी समाजशास्त्र के भविष्य के बारे में आपका क्या भविष्य–निरूपण (vision) **है?**

लि. स.: अमरीकी अकादमी ज्ञान के संचय के बारे में, यूरोपीय अकादमी मूल्यों के बारे में और चीनी अकादमी यथार्थ के प्रति चिंतित है। अर्थात् चीनी अकादमी में यथार्थ के बारे में सोचेन की परम्परा है। यद्यपि अमरीकी समाजशास्त्र के प्रभाव एवं कई अन्य कारकों के कारण चीनी समाजशास्त्र में अब यथार्थ के अध्ययन में रूचि कम हो रही है। समाजशास्त्र अब समाज के अध्ययन के बजाय खुद के अध्ययन के रूप में प्रतीत होता है। जब शोध समाज के बारे में होता है तब भी यह अत्यधिक विखण्डित ज्ञान का सृजन करता है।

मैंने हमेशा यह माना है कि सामाजिक संक्रमण का अध्ययन, विशेषतः उनकी प्रक्रियाओं एवं घटनाओं के परीक्षण के माध्यम से, करना महत्वपूर्ण है। यह तब भी महत्वपूर्ण है जब हम सिर्फ समाजशास्त्र के स्वयं के विकास के लिए चिंतित हैं। समाजशास्त्र के संदर्भ में हमारे इस आधुनिक विषय के सभी जन्मदाता पूंजीवादी सभ्यता की व्याख्या करने के लिए चिंतित थे। दूसरी तरफ मानवीय इतिहास के अन्तर्गत साम्यवाद निसंदेह एक और मुख्य सभ्यता को प्रस्तुत करता है। इस में संस्थाओं, मूल्यों और तर्कों का एक कुलक है, जो पश्चिमी पूंजीवाद से बहुत अलग है और हाल ही में इसमें ऐतिहासिक रूपांतरण भी हुआ है। मेरा मानना है कि साम्यवादी सभ्यता की विशेषता, तर्क और संक्रमण प्रक्रिया का अध्ययन समकालीन समाजशास्त्र और सामान्य रूप में समाज विज्ञान के लिए नई प्रेरणा और प्रेरक बनना चाहिये। ■

> एक अकादमी के प्रतिष्ठिकरण पर

राबर्ट वान क्राइकेन, सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया एवं आई. एस. ए. उपाध्यक्ष वित्त तथा सदस्यता (2010–2014)

पीयर बूरदीए – एक प्रतिष्ठित व्यक्ति प्रतिष्ठिकरण के विरुद्ध

आज के विश्वविद्यालयों में कोई भी ऐसी विभाजन रेखाओं को देख सकता है, जो लगातार लम्बी एवं चौड़ी होती जा रही हैं। यह विभाजन अकादमिक समुदाय में तीन स्तरों/वर्गों के रूप में देखा जा सकता है:

- उच्च स्तर पर स्थापित अनुंसधानकर्ता अभिजन जिनके पास शैक्षणिक/अध्यापन एवं प्रशासनिक दायित्व या तो आंशिक हैं या बिल्कुल नहीं हैं।
- अध्यापन एवं अनुसंधान कर्ताओं का मध्य वर्ग जो अनुसंधान के क्षेत्र में बढ़ती संख्या एवं गुणवत्ता की माँग तथा निरन्तर वृद्धि की तरफ जा रहे विद्यार्थियों के अध्यापन के बीच फँसा हुआ है। अभिजन अनुसंधान में केवल उपलब्धि के साथ जुड़ी अभिव्यक्ति/आउटपुट निर्धारण हेतु प्रयुक्त होता है, परन्तु इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता अतः यह वर्ग असफलता एवं कुण्ठा का शिकार हो जाता है और अनुसंधान की स्थिति को आगे बढ़ाना उनकी एक प्राप्त करने वाली आकांक्षा बन कर रह जाती है।
- अस्थायी एवं अंशकालिक शिक्षकों एवं अनुसंधानकर्ताओं की एक बड़ी जनसंख्या जिसे सर्वहारा के निकट रखा जा सकता है। यह बड़ा समूह अति असुरक्षा एवं खराब कार्य स्थितियों का शिकार होता है। यह समूह आशा करता है कि वह कभी पूर्ण कालिक एवं अवधिबद्ध पदों को प्राप्त करेंगे।

ऐसे अनेक माध्यम हैं जिनके द्वारा कोई भी इन प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कर सकता है, परन्तु यहाँ मैं उस माध्यम के कुछ पक्षों पर प्रतिक्रिया करूँगा जिनमें 'महत्वीय तार्किकता' (सैलिब्रिटी रेशनलटी*) सक्रिय होती है। महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों जैसे नायक, नायिकाओं, टी. वी. से सम्बद्ध व्यक्तित्वों, खेल सितारे इत्यादि जो कि सामाजिक दृष्टि से प्रभावी है को समझने के लिये सामाजिक एवं आर्थिक प्रणालियों के मध्य सम्बद्धता की पड़ताल आवश्यक है। ये महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं विश्व भर में हो रहे बदलावों के विश्वविद्यालयों पर प्रभाव के मध्य भी सम्बद्धता है। मेरे व्यापक अध्ययन में यह तर्क पुनः स्थापित हो रहा है कि असमानता, अस्मिता, शक्ति एवं शासन की अवधारणा को महत्व पूर्ण रूप दिया जावे। ऐसे अनेक उदाहरण है एवं अनेक तरीके है, जिनके आधार पर वैज्ञानिकों व शिक्षाविदों के समूह को 'सैलिब्रिटी सोसायटी' की प्रक्रियाओं एवं गत्यात्मकता को समझने के लिये उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।

राबर्ट मिचेल्स एवं अन्य ने अपने अध्ययनों में महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों (सेलिब्रिटी) को विवेचन की दृष्टि से स्थान दिया है परन्तु सी राइट मिल्स ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मिल्स उन माध्यमों की चर्चा करता हैं, जहाँ/जिसमें सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं में निहित गत्यात्मकता उन व्यक्तियों को निर्मित करने में सहायता करती है जिन्हें 'सेलिब्रिटी' कहा जाता है। सेलिब्रिटी वे उच्च अभिव्यक्ति देने वाले व्यक्ति है जो दृष्य है। सेलिब्रिटी संज्ञानात्मक एवं व्यावहारिक स्तर पर अपनी अभिव्यक्ति मूलक भूमिकाओं के कारण संदर्भ बिन्दु बनता है और प्रतियोगिता के क्षेत्र में उपस्थित अन्यों के लिये आदर्श स्वरूप प्राप्त कर लेता है। अपनी पुस्तक 'पावर इलीट' (आक्सफोर्ड, 1957:74) में मिल्स ने लिखा

'अमेरिका में यह व्यवस्था उस स्तर तक पहुँच गयी है जहाँ एक व्यक्ति मैदान में क्रम में बने अनेक केन्द्रों पर छोटी सफेद गेंद को अधिक से अधिक कुशलता एवं दक्षता के साथ प्रहार कर सकता है। यह कुशलता एवं दक्षता अन्यों की तुलना में अधिक है और इस आधार पर अमेरिका के राष्ट्रपति के पद पर वह सामाजिक दृष्टि से निकट पहुँच सकता है। यह उस स्तर पर पहुँच सकता है, जहाँ रेडियो एवं टेलीविजन पर प्रवक्ता एवं मनोरंजन करने वाले कलाकार प्रभावशाली औद्योगिक अधिकारियों, केन्द्रीय मन्त्रियों एवं उच्च सैन्य अधिकारियों के लिए निकटता के केन्द्र बन जाते हैं। यह जरूरी नहीं है कि व्यक्ति कितना श्रेष्ठ है अपितु यह श्रेष्ठता तब तक है जब तक कि वह प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त कर अन्य से आगे बढ़ जाता है। वही व्यक्ति 'सेलिब्रिटी' कहा जाता है।'

यह पूर्णरूपेण सत्य नहीं है। कोई भी रॉक स्टार राष्ट्रपति से मिल सकने में सफल हो सकता है। परन्तु वह व्यक्ति जिसके पास छोटी सफेद गेंद है भी बहुत अच्छा कर सकता है। मुख्य बिन्दु यह है कि उपस्थिति अर्थात् दृष्यता (विजिविलिटी) एवं मान्यता का व्यापक एवं जितना सम्भव हो सके विस्तार अपने आप में एक स्त्रोत या मूल्य बन जाता है, यह उस पक्ष से स्वतन्त्र है जिसने प्रथम चरण में मान्यता को स्थापित किया।

राबर्ट मर्टन इस समस्या/प्रघटना को वैज्ञानिक प्रयासों में 'मैथ्यू प्रभाव' की संज्ञा देते हैं। गप्पबाजी की चर्चा करते हुए मैथ्यू के विचार (25:29) है कि ''प्रत्येक को जो कुछ उपलब्ध है, दिया जाना चाहिए, उसे वह सब अधिकता से प्राप्त होगा, पर उसे जो प्राप्त है को लिया जाना या उस पर प्रहार करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।''

उनका मत है कि एक वैज्ञानिक जिसे नोबल पुरस्कार मिला है, लोगों के मध्य अपने अन्य सहयोगियों की तुलना में अधिक आकर्षण का केन्द्र होगा अर्थात् उसकी ओर लोग अधिक आकृष्ट होंगे। यह आवश्यक रूप से महत्व नहीं रखता कि उस पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक के अनुसंधान का महत्व व गुणवत्ता कितनी है। किसी की अकादमिक उत्कृष्टता की प्रस्तुति स्वयं के द्वारा संकेन्द्रण का परिणाम होती है यह उस समय तक है जब तक कि वह अध्ययन क्षेत्र में सक्रिय है। 1971 में इसका विवेचन हरबर्ट सायमन ने किया था। सायमन के अनुसार ज्ञान एवं सूचनाओं का अब अधिशेष उपस्थित होता है, तो वह स्त्रोत जो सीमित है और एक महत्वपूर्ण विक्रय वस्तु बन जाता है को 'ध्यान' की संज्ञा दी जाती है। ध्यान वह क्षमता है जो मान्यता की तरफ लोगों को अभिमुखित करती है, यह मान्यता एक दिशा की तरफ होती है अथवा एक वस्तु की अपेक्षा दूसरी वस्तु की ओर होती है। ध्यान एक सीमित संसाधन है अथवा यह 'स्थिति मूलक वस्तु' है जो सदैव चक्रीयता के साथ जुड़ी है। इस पक्ष का रिचार्ड सेनेट 'स्टार व्यवस्था' की (स्टार सिस्टम) की संज्ञा देते है इसका संगीत से सम्बन्ध है। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा एक विशेष संगीतज्ञ एक अच्छे संगीतज्ञ की स्थापित सीमाओं के परे जाने की दक्षता रखता है। इस संगीतज्ञ में कुछ ऐसा अतिरिक्त होता है जो श्रोताओं को आकर्षित करता है। परिणामस्वरूप संगीत के व्यस्त क्षेत्र में से निकल कर वह विशिष्ट बन जाता है।

वैश्विक स्तर पर क्रम विन्यास एवं अभिव्यक्ति के मापन तथा मूल्यांकन में हो रहे अनवरत उन्नयन मूलक बदलावों की पृष्ठभूमि में अकादमिक विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों एवं देशों के मध्य प्रतियोगात्मक गतिशीलता के नवाचारी पक्ष उपस्थित होते रहते हैं। यह एक यथार्थ है कि जहाँ कहीं भी प्रतियोगिता है, महत्वपूर्ण व्यक्तित्व (सैलिब्रिटी) उभरते रहते हैं और इन्हें स्टार अकादमिक विद्वान, अनुसंधान कर्ताओं एवं विश्वविद्यालयों के रूप में देखा जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि किसी का अनवरत रूप से बार बार उल्लेख इस तथ्य का आंकलन है कि उसका अनुसंधान कितना प्रभावशील है। साथ ही साथ यह उस विद्वान की विद्वता को स्थापित कर उसे महत्वपूर्ण व्यक्ति (सेलिब्रिटी) बनाने से भी सम्बद्ध है। हम यहाँ बूरदिए की चर्चा कर सकते हैं उन्होंने जो कुछ कहा वह केवल प्राथमिक ही नहीं है और विश्लेषण की दृष्टि से अन्तर ही स्थापित नहीं करता पर साथ ही संकेत देता है हम बूरदिए को जानते है। अकादमिक स्तर पर सैलिब्रिटी की अवधारणा तीन स्तर पर सक्रिय होती है (1) व्यक्ति स्तर पर (सामान्यतः अनुसंधानकर्ता कभी कभी शिक्षक) (2) संस्थागत (विश्वविद्यालय) एवं (3) राष्ट्र अथवा क्षेत्र (देश अथवा देशों का झुण्ड)। हम इसे दृष्टान्तों के रूप में देख पाते हैं। हम चाहते है या चाहने के लिए बाध्य होते हैं कि हम उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के क्षेत्रों में या वैश्विक विश्वविद्यालयी व्यवस्था में सहभागिता करें।

जिस प्रकार किम कारदशियन प्रभाव सक्रिय होता है की भाँति वे भी उपस्थिति के इच्छुक होते है। कारदशियन प्रभाव जो कि दृष्यता से सम्बद्ध है (कार दशियन विजिविलिटी इफैक्ट्स) किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति (सैलिब्रिटी) की छवि को बाजार में प्रायोजकों के माध्यम से बेचने से सम्बद्ध है। यह उस महत्व व्यक्ति को ब्राण्ड में परिवर्तित करता है। विश्वविद्यालयों का क्रम विन्यास में स्थान विद्यार्थियों के नामांकन को प्रभावित करता है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय की सामाजिक प्रतिष्ठा व मुख्य आयोजकों, दानदाताओं एवं सरकारों का उस विश्वविद्यालय की तरफ रूझान भी इससे प्रभावित होता है। यही कारण है कि विश्व विद्यालय स्वयं को ब्रान्ड के रूप में स्थापित करने के लिए धनराशि का व्यय करते हैं।

मुख्य व्यक्तित्व (सैलिब्रिटी) के समाजशास्त्रीय विश्लेषण को केन्द्र में रख कर विश्वविद्यालय के रूपान्तरण सम्बन्धी प्रत्युत्तरों से हम क्या सीखते हैं? इस आलेख में उतना स्थान नहीं है कि इसे विस्तार दिया जाये पर मैं कुछ सम्भावनाओं को प्रारम्भिक स्तर पर व्यक्त कर सकता हूँ। पहता तो यह तर्क है कि ध्यान के उत्पादन एवं वितरण के लिए उपकरणों की तरफ हम आकृष्ट होते हैं। ध्यान का तत्व अब सर्वाधिक प्रभावी है न कि यह कि उस महत्वपूर्ण व्यक्ति ने किस उत्कृष्ट कार्य या विचार का अपने क्षेत्र में सृजन किया है। विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठा एवं विश्वविद्यालयों की प्रतिष्ठा सुनिश्चित करने के लिए अनेक प्रतिष्ठा प्रयास खेल की भाँति हो रहे है, जिनमें सन्देहास्पदता भी है। यह समझना जरूरी है कि जो कुछ ''मैरिटोक्रेसी'' के नाम पर हो रहा है वह वास्तव में 'सेलिब्रिटोक्रेसी' है। हम सबका ध्यान खींचने के लिए विश्वविद्यालय 'ध्यान आकृष्टि का संघर्ष' कर रहे है। दूसरे यदि 'सेलिब्रिटी' खेल है और हम सब उसमें संलग्न है तो हमें यह अवलोकन करना चाहिए कि सैलिब्रिटी के व्यापक क्षेत्र में क्या हो रहा है और क्या हम अकादमिक क्रियाओं में वही रणनीति अपना रहे हैं। हमें एण्डी वारहोल का वह विचार पता है कि ''भविष्य में प्रत्येक केवल 15 मिनिट्स ही प्रसिद्ध रहेगा''। पर बाद में वह अपने विचार से बदले और कहा कि ''15 मिनट में प्रत्येक प्रसिद्ध हो सकता है''। विभिन्न क्षेत्रों में हम ऐसी प्रणालियों की उपस्थिति पा सकते हैं जिनके द्वारा बड़ी संख्या में व्यक्ति प्रसिद्धि पा रहे हैं उन्हें मान्यता प्राप्त हो रही है (सैलिब्रिटीज) और वे केन्द्र में नजर आ रहे है'।

ज्ञान एवं चेतना के क्षेत्र में विद्वानों के संस्तरण को स्वीकारने के बजाय, जो कि हालीवुड़ के पुराने स्टार सिस्टम की भाँति है, यह सम्भव है कि मान्यता एवं स्वीकृति के लिए ''नीचे के स्तर'' से कोई तन्त्र विकसित हो। जिसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को सामने आने का एवं प्रसिद्धि पाने का अवसर मिले। विभिन्न क्षेत्रों की अनुसंधान प्रणाली को व्यापकता दी जावे भले ही उसमें सितरायी चमक का तुलनात्मक रूप में अभाव हो पर वे सम्बद्ध इकाई की रूचि का भाग हों और जिनकी उपयोगिता एवं उत्तमता स्थापित हो। 'जो जीता वही सिकन्दर' की मानसिकता पर प्रहार आवश्यक है। इस तर्क को अस्वीकृत किया जा सकता है। विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणालियों एवं भूमिकाओं में बदलाव की आवश्यकता है न कि उस तन्त्र पर बल देने की जिनके आधार पर वह ''सितारायी'' शैली का भाग बनता है। अकादमिक क्षेत्र में इस सितारायी शैली की उपेक्षा आवश्यक है क्योंकि यह शैली हम सब को हमारी अपेक्षित भूमिकाओं से अलग कर रही है। ■

> एक प्रभावी व्यक्तित्व (सैलीब्रिटी) की रचना :

समाजशास्त्र के प्रोफेसर से पाकशास्त्र के गुरू (क्यूलिनरी गुरू) का बनना

वेदात मिलर, इस्तान्बुल, टर्की

पाकशास्त्र गुरु वेदात मिलर – अपने भोजन से बहुत खुश नहीं

कोई भी व्यक्ति यह सोच सकता है कि उसके सामने टेलीविजन स्क्रीन पर दिख रहा व्यक्ति एक धार्मिक समारोह में उपस्थित है और गहन प्रार्थना में लीन है। वह दोनों हाथों से अपने सिर को पकड़े हुए है और उसकी आधी बन्द आँखें किसी बिन्दु पर केन्द्रित हैं। अचानक उसका सैल फोन उसकी जेब से निकल कर समुद्र में गिर जाता है। इस समय एक भ्रम की स्थिति उभरती है। कैमरा यह दिखाने लगता है कि एक दुबला पतला व्यक्ति जिसके आगे के दो दाँत नहीं हैं एक शैफ (किचन विशेषज्ञ) के कपड़े (एप्रिन) पहने खड़ा है। वह वेटर्स (होटल में कार्यरत सेवाकर्मीयों) पर चिल्ला रहा है कि सैल फोन को खोज कर लायें। आश्चर्यजनक रूप से हमारा साथी एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना से परिचित नहीं है। वह उस दुबले पतले शैफ की तरफ मुड़ता है और प्रश्न करता है कि 'इस पकवान (डिश) में आपने 'शैरी सिरके' के स्थान पर 'साइडर सिरके' का प्रयोग क्यों किया है?'

मैं मदद नहीं कर सकता पर हँसता हूँ। मैं स्वयं इस कार्यक्रम को अविश्वसनीयता एवं सुखद आश्चर्य से देख रहा हूँ। हालांकि यह कोई 'रियलिटी कार्यक्रम' नहीं है। यह एक भोजन सामग्री से सम्बद्ध टी. वी. कार्यक्रम है। मुझे यह पता है कि सप्ताह के अन्तिम दिनों में टर्की में एक मुख्य टी. वी. चैनल एनटीवी पर यह व्यस्त समय (Prime time) पर प्रसारित किया जावेगा। मैं इस कार्यक्रम का 'स्टार' हूँ। मैं रेस्टोरेन्ट्स में जाता हूँ, वहाँ विभिन्न भोजन सामग्रियों का स्वाद लेता हूँ। उनके स्वाद के स्तरों एवं भोजन सामग्री की गुणवत्ता पर प्रभावी निर्णय एवं मूल्यांकन मत प्रस्तुत करता हूँ। मैं वहाँ आलोचनात्मक रूख अपनाता हूँ तथा वहाँ कार्यरत शैफस् से स्पष्टीकरण भी माँगता हूँ। यदि उस रेस्टोरेन्ट में शराब की कोई सूची है तो मैं उन्हें उन शराब के ब्रान्ड्स को ग्लास में थोड़ा थोड़ा डालने को कहता हूँ। उन ब्रान्डस का स्वाद लेता हूँ और फिर

>>

शराब की गुणवत्ता पर एक शराब के कौन से मिश्रण सापेक्षिक रूप से स्वाद वाले एवं सफल हैं पर अपना मत व्यक्त करता हूँ।

मैं दो कैमरा एवं चैनल के एक प्रस्तुतकर्ता (प्रोड्यूसर) के साथ यात्रा करता हूँ। हम टर्की के अधिकांश रेस्टोरेन्ट्स में जाते हैं पर साथ ही रोम, केटेलोनिया, जार्जिया, सीरिया एवं लेबनान में भी यात्रा करते हैं। प्रत्येक रेस्टोरेण्ट की यात्रा व निरीक्षण कर मैं सामान्य मूल्यांकन करने के लिए दो या तीन मिनिट्स का समय लेता हूँ। तत्पश्चात् उस रेस्टोरेण्ट को सितारों (स्टार्स) की संख्या प्रदान कर क्रम विन्यास का भाग बना देता हूँ। ये सितारे एक से पाँच तक की संख्या तक प्रदान किये जाते हैं। जिन रेस्टोरेण्ट्स को चार या पाँच सितारों के क्रम विन्यास में स्थान मिलता है उन्हें जैक पॉट मिल जाता है अर्थात् उनकी तो लॉटरी लग जाती है। ऐसे रेस्टोरेन्ट्स में ग्राहकों की संख्या एक दम बढ़ जाती है जबकि मेरी यात्रा के पूर्व ये रेस्टोरेन्ट्स ग्राहकों की दृष्टि से लगभग खाली भी रहते थे।

क्या मैं 'शैफ' हूँ? नहीं, मैं तो अण्डा तक तोड़ने में सक्षम नहीं हूँ। क्या मैं एक प्रभावी व्यक्तित्व (सैलिब्रिटी) हूँ? हाँ, सड़कों पर लोग मुझे जानते हैं एवं हर समय मुझसे एक फोटो की माँग करते हैं। इन्टरनेट के विभिन्न हिस्सों में, वे मेरे बारे में लिखते हैं। वे बिना किसी अवरोध के अर्थात् अनवरत मेरे इरादों का अनुमान लगाते हैं, वे मेरे चरित्र के बारे में भी अनुमान लगाते हैं, साथ ही मेरे निजी जीवन के बारे में जानने के इच्छुक रहते हैं। महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से मुझे पत्र प्राप्त होते रहते हैं जिसमें वे मुझसे यह पूछते हैं कि 'हम आप जैसे कैसे बन सकते हैं?' मिडिल स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक पत्र लिख कर अनुरोध करते हैं कि मैं उनके बच्चों के लिये कुछ लिखूँ क्योंकि मैं उनके बच्चों का 'आदर्श' हूँ। वे अभिभावक यह भी लिखते हैं कि उनके बच्चे बड़े होकर 'वेदात मिलर' बनना चाहते हैं।

लेकिन मैं कौन हूँ? यह सब कुछ कैसे हुआ? मैं जब तीस वर्ष पूर्व का अतीत देखता हूँ तो मैं पाता हूँ कि स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष का विद्यार्थी बर्कले के समाजशास्त्र विभाग में प्रवेश करता है, उसके पूर्व वह बॉस फारस विश्वविद्यालय टर्की से अर्थशास्त्र में पूर्व स्नातक की डिग्री प्राप्त करता है। वह विद्यार्थी स्राफा (Sraffa), नव्य–कीन्सवाद (neo-Keynesianism), अल्थ्यूजर (Althusser), एवं फ्रांसीसी संरचनात्मक मार्क्सवादियों के प्रति रूझान रखता था। लेकिन बर्कले में वह नृशासकीय पद्धति की 'खोज' करता है एवं सामाजिक परिवर्तन की गत्यात्मकता को समझने के लिए वह 'गहन प्रकृति के एकल अध्ययन' में रूचि लेने लगता है। उसके शोध सलाहकार माइकल बुरावे उसे इस पक्ष के लिए राजी करते हैं कि टर्की जैसे देश में जहाँ आश्रित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है, राज्य की 'स्वायत्तता' को कैसे समझा जाय और उससे सम्बन्धित कौन से प्रश्न उत्पन्न किये जायें। इन समस्त आयामों को समझने के लिए तुलनात्मक पद्धति को प्रयुक्त करना आवश्यक होगा तभी सम्बन्धित आयामों के सैद्धान्तिक स्वरूप उभारे जा सकते हैं। अतः कुछ पद्धतिशास्त्रीय विश्लेषणात्मक विमर्शों के उपरान्त तुम्हें चुनना होगा कि तुम टर्की एवं उत्तर द्वितीय विश्व युद्ध के फ्रांस की आर्थिक योजना की तुलना करो ताकि राज्य की स्वायत्तता से सम्बद्ध संरचनात्मक विभेद एवं 'केन्द्रीय' तथा 'परिधिमूलक' देशों में व्याप्त वर्ग सम्बन्धों को जाना जा सके।

इस बिन्दु पर मैं अपने को अबोध (innocent) के रूप में प्रस्तुत करने का इच्छुक हूँ। मैं यह कहूँगा कि मेरे चुनाव के प्रयासों में ''गैर इरादतन'' परिणामों के रूप में फ्रेंच शराब का प्रवेश हुआ। फ्रांस मेरे लिए दिशामूलक अर्थव्यवस्था के रूप में प्रस्तुत एक आदर्श प्रारूप भी था। लेकिन नहीं, ऐसा नहीं था। बर्कले में करमिट लिंच शराब व्यवसायी से 1982 हेनरी जायर बर्गोजन के लिए 10 डालकर खर्च कर मैंने ग्रेट बरगण्डी शराब खरीदी और मैं उसका हिस्सा बन गया। इन्टरनेशनल हाउस में अपने कमरे के लिए मैं एक रेडियो नहीं खरीद सकता था परन्तु मैं अच्छी शराब का सेवन करता था। अच्छी बर्गोजन पीना मेरे लिए एक अनूठा एवं उत्तेजक अनुभव प्रदान करता था। एक अच्छी लाल बर्गोजन में अनेक तरह के स्वाद जनित अनुभव होते हैं और उनमें भिन्न भिन्न तरह की खुशबू होती है। उसकी उतार चढ़ाव वाली प्रकृति स्वाद को भिन्नता देती है और उसे चखने वाले को चुनौती भी। उसमें विद्यमान नारी सुलभ स्वरूप और उसमें उत्पन्न होता तेज प्रकृति का स्वाद इस शराब को विशिष्ट बना देता है। यह अत्यन्त जटिल और उत्तेजक है। इसमें ऐसा सब कुछ सम्मिलित है जिसे पूंजीवादी–लोकतान्त्रिक एवं शिष्ट पश्चिमी सभ्यता, रीगन के शासन की अवधि के दौरान सांस्कृतिक सुधारवाद के उभार जो अमेरिका में आये तथा टर्की में जनरल केनन एवरेन्स के सैन्य शासन की विशेषताओं के संदर्भ में महसूस किया जा सकता है।

लेकिन आप फ्रांस की टर्की के साथ तुलना क्यों कर रहे हैं? यह सवाल मुझसे उस महिला ने किया जो परिसर में फुलब्राइट शोध फैलोशिप के लिए मेरा साक्षात्कार लेने आयी थी। मुझे अब तक याद है कि मेरा उत्तर ''शराब एवं भोजन'' सुन कर उनके चेहरे पर हतप्रभ कर देने वाले उतार चढ़ाव पैदा हुए थे। वे शायद मेरे उत्तस से सहमत थीं। इस कारण मुझे यह फैलोशिप प्राप्त हो सकी। मैं अपने उत्तर के साथ पूरी सत्यता के साथ जुड़ा था। माल्कम ग्लेडवैल ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'आउटलियर्स : द स्टोरी आफॅ सक्सेज' (Outliers: The Story of Success) में यह स्थापना दी है कि 10,000 घण्टों का शासन कितना एक पक्षीय परन्तु सकारात्मक भी होता है। बहुत से लोग अपनी स्वाभाविक दक्षता के साथ जन्म लेते हैं लेकिन उन्हें लाभकारी बनाने के लिए उन्हें कार्य के प्रति पूर्णरूपेण प्रतिबद्ध वाला व्यक्ति बनाना होता है। अपने को चरम स्तर पर पहुँचाने के पहले तुम्हें 10,000 घण्टे कार्य में लीन होना पड़ता है तभी तुम्हें लोग जानेंगे। शराब के शासन हेतु 10,000 बोतलों के बारे में क्या? मैं इस स्थिति के निकट विश्वास के साथ 1985 से 1990 के बीच में आया जब मैंने अनेक क्लबों की सदस्यता ग्रहण की एवं ग्रेजुएट स्कूल के हिस्से के दौरान अनेक समूहों से स्वयं को जोड़ा।

इसके उपरान्त अनेक वर्ष तीव्र गति से गुजरे। मैंने राजनीतिक अर्थशास्त्री के रूप में विश्व बैंक में नियुक्ति ली पर जब अमेरिकन समाजशास्त्रीय परिषद ने 1990 में मेरे शोध ग्रन्थ को 'उत्कृष्ट शोध ग्रन्थ' का पुरस्कार दिया तो मैं वापस अकादमिक जीवन में लौट आया। मैंने ब्राउन विश्वविद्यालय एवं जार्जिया तकनीकी संस्थान में शिक्षण कार्य किया, स्टेनफोर्ड से कानून की डिग्री प्राप्त की एवं 'ऑर्डर ऑफ द कोइफ' के लिए चुना गया। मैंने एक शैक्षणिक सत्र उच्च अध्ययन संस्थान में व्यतीत किया। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं 20वीं शताब्दी के महान विचारकों में से एक अलबर्ट हिर्शमान (Albert Hirschman)के साथ निकटता प्राप्त करूं। यहाँ मुझे सिलिकान वैली में नये प्रारम्भ किये गये संस्थानों (start-ups) में भी समय व्यतीत करने का अवसर मिला।

पर सिलीकान वैली में अनुभव प्राप्ति के उपरान्त मुझे फिर कभी यह महसूस नहीं हुआ कि मुझे अकादमिक जीवन में पुनः वापस जाना चाहिए। जार्जिया तकनीक सार्वजनिक नीति विभाग (जार्जिया टैक पब्लिक पालिसी डिपार्टमेण्ट) में ''जार्जिया परिवहन विभाग द्वारा बाह्य सलाहकारों के इस्तेमाल में कुशलता/दक्षता की वृद्धि कैसे की जाये'' नामक प्रोजेक्ट (योजना) में सहभागिता ने मुझे अकादमिक जीवन के प्रति तटस्थता प्रदान करने में योगदान दिया। मेरी तकनीकी

विशेषज्ञ (टैक्नोक्रेट) बनने में कोई रूचि नहीं थी। मैंने अपने सहयोगियों के साथ समान रूचियों के क्षेत्र में सहभागिता नहीं की। मैंने विकल्पों की तलाश की।

वाशिंगटन डी सी में विश्व बैंक में कार्य के दौरान मेरे जीवन में आये एक मित्र को टर्की में 'मिलियत' नामक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र में सामान्य सम्पादक का पद प्राप्त हुआ। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जिसकी निष्ठा का क्षेत्र प्रतिष्ठा प्राप्त हो और जो शराब एवं भोजन के विषय में विस्तृत व उपयुक्त ज्ञान रखता हो। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके समाचार पत्र में सप्ताह में दो बार छपने वाले स्तम्भ में लिखूँगा। तब से मैं उनके समाचार पत्र में स्तम्भकार के रूप में इस विषय पर अनवरत लिख रहा हूँ।

क्या मेरी लोकप्रियता की कोई सैद्धान्तिक व्याख्या है? मेरा मत है कि ऐसी व्याख्या सम्भव है। मेरे संदर्भ में जो गत्यात्मकता मेरे जीवन में उभरी और जिसने मुझे प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता प्रदान की, की तुलना सन् 2002 में शासन में आयी जस्टिस एण्ड डवलपमैण्ट पार्टी (ए के पी) की गत्यात्मकता से की जा सकती है। इन दोनों प्रघटनाओं में समानता हैं। सैन्य–नौकरशाह अभिजनों एवं बड़े पूंजीपतियों को एकाधिकार वादी खण्डों में धर्मनिरपेक्ष गठबन्धन ने राजनीति एवं अर्थतन्त्र पर अपनी पकड़ खो दी थी। भ्रष्टाचार की तीव्र व्यापकता जो राजनीतिक क्षेत्र में उभरी तथा आर्थिक संकटों के दौर में ए के पी ने, जो कि इस्लामिक लोकप्रियता वाद से सम्बद्ध था, पारदर्शिता एवं सुचारूता का दावा एवं वादा किया। शक्ति समूह में हुए विभाजन एवं पूंजी के एकाधिकारवादी खण्डों से प्राप्त हुए समर्थन से ऐ के पी को फायदा हुआ। इस स्थिति ने एनाटोलियन पूंजीपतियों के हाशिये पर आये लोगों, नगरीय व्यवसायी, इमारतों के ठेकेदार, रूढ़िवादी युवाओं से जुड़े शिक्षित सदस्य एवं नगर की गरीब जनता के असन्तुष्ट हिस्से को भी सक्रिय किया।

मैं इस तथ्य से आश्चर्यचकित हूँ कि मेरा कार्यक्रम एनाटोलिया में तथा वहाँ के नगरीय निर्धनों में इतना लोकप्रिय कैसे है। निश्चित रूप से वे शिक्षित लोग जो बाहर खाना खाने के लिए क्षमता रखते हैं, मेरे अनुयायी हैं। लेकिन नगर की हाशिये पर खड़ी जनसंख्या विशेषतः युवाओं में यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय कैसे है, का विश्लेषण किस प्रकार किया जाय? मेरी प्रस्थिति चूँकि ''बाहरी व्यक्ति'' की है अतः मुझे इसका निश्चित रूप से लाभ मिला होगा और लोग मेरी तरफ आकृष्ट हुए होंगे। मैं भोजन एवं शराब उद्योग में पुराने कर्मियों के नेटवर्क (जाल) का भाग नहीं था, साथ ही बड़े रेस्टोरेण्ट्स के मालिकों एवं खाद्य (भोजन) उद्योग के मालिकों से मेरा कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं था।

लेकिन युवाओं में विशेषतः मेरी लोकप्रियता का मेरी दृष्टि में एक और कारण है। इस्लामिक संस्कृति में पवित्रता–कठोरता के तत्व सदैव उपस्थित रहे हैं। सत्ता क्षेत्र में ए के पी के उभार से इन तत्वों का भी प्रभाव बढ़ा है। कठोरता के ये तत्व जब पूर्वाग्रह के रूप में दैहिक सुख के विरूद्ध उभार लेते है और साथ ही विरोधियों के राजनीतिक दमन तीव्र होते जाते हैं तब युवा लोग अन्तःमुखी होने लगते हैं और समृद्ध कल्पनाओं के लोक का भाग बन जाते हैं। विरोध के सामूहिक चरित्र के प्रति असहिष्णुता एवं जन संचार साधनों पर 'सैंसरशिप' (निगरानी) की कठोर प्रकृति जहाँ एक तरफ भय को जन्म देती है, वहीं दूसरी ओर कल्पनाशीलता को बढ़ावा देती है। युवा लोग राजनीति को 'गन्दा' तथा आर्थिक जीवन को ''घटिया'' (घृणित) मानने लगते हैं। वे इस तर्क के प्रति सजग हैं कि उनकी प्रतिबद्धताओं से जुड़े बलिदान जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। एक ऐसा बेपरवाह व्यक्ति जो अपने पिता की आयु के प्रति रूचि नहीं रखता, जो भोजन एवं शराब के प्रति अत्यधिक लगाव रखता है, के पास आकर्षक प्रकृति का 'वैकल्पिक–स्व' है। जहाँ अस्तित्व के आधार निर्बल हों एवं आकांक्षाए ठहर गयी हों 'स्वाद' के प्रति बढ़ता लगाव वह पक्ष बन जाता है जो उनके जीवन में सन्तुष्टि के पक्षों को विस्तार दे सकता है।

यह सम्भव है कि मैं उनका 'जायर बर्गोजन' हूँ जो कि उनकी मनोवैज्ञानिक उर्जा को दुगना कर दे एवं दैहिक इच्छाओं के दमनित पक्ष को निर्बल कर दे। ये पक्ष उस परिवेश में उभर रहे हैं जहाँ विपरीत प्रकृति का सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेश है। यह 'घुमावदार आदर्शवादिता' जो सीमान्त युवाओं में जो कि विभिन्न आर्थिक वर्गों का हिस्सा है, में उभार लेती है और उसका एक रूप 'सैलिब्रिटी संस्कृति' के रूप में उपस्थित होता है। इसके साथ ही सैलिब्रिटी एक 'आदर्श' बन जाता है। कोई शायद आपकी सहायता करे या न करे पर मार्क्स के इस मत से आप सहमत होंगे ''सैलिब्रिटी (प्रभावी) संस्कृति की समाप्ति ही सैलिब्रिटीज (प्रभावी व्यक्तियों) की मुक्ति है।'' ■

> पन्नों की हिंसा

जोहाना परा, यूनिवर्सीदाद इकेसी, काली, कोलम्बिया

किसी देश के पास कोलम्बिया से अधिक पन्ने नहीं हैं। आपस में लडते हुए परिवारों ने खनन को अत्यधिक खतरनाक परिस्थितियों के अन्तर्गत एक हिंसक व्यवसाय बना लिया है। यहाँ एक व्यक्ति अपने हिस्से के पन्नों को गिनते हुए। फोटो : यान सोचोर।

कोलम्बिया में घटित होने वाली गुटीय हिंसा, विशेषतः वायलेण्टोलोजी (हिंसाशास्त्र) नामक विशेषता के माध्यम से, समाजशास्त्रीय विश्लेषण का उद्देश्य बन गई है। कोलम्बियन समाजशास्त्र की यह शाखा प्रारंभिक समय में ला वायलेंस्या नामक कोलम्बिया का ऐतिहासिक काल (1945–1965) के अध्ययन को समर्पित थी। इस का आधार बिशप जर्मन गुजमेन केम्पोस, आर्लेन्डो फाल्स बोरछा एवं एडुआर्ड़ो उमाना द्वारा 1962 में लिखित ला वायलेंस्या एन कोलम्बिया : इस्टूडियो दे अन प्रोसेसो सोशल (La Violencia en Colombia : Estudio de un Proceso Social, 1962) नामक मौलिक कृति थी। ''संरचनात्मक गरीबी'' की अवधारणा पर आधारित इस कृति में नागरिक हिंसा के लिए उत्तरदायी खलबली की समाजशास्त्रीय व्याख्या है। एक विशेष घटना, 9 अप्रैल 1948 को उदारवादी दल के नेता जार्ज एलिसर गेतान की हत्या, ने सामाजिक और राजनैतिक कल्पना में विद्यमान निरंतर चलने वाली हिंसा को अपेक्षा से अधिक वास्तविकता में बदल दिया। परन्तु इस ''सामाजिक ढाँचे'' के विच्छेदन का निहित कारण सांकेतिक राष्ट्र–राज्य एकता की कमी था।

कई राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक शक्तियों ने जनता को शस्त्र उठाने ओर अपने कट्टर विरोधियों को युद्ध में मृत्यु तक सामना करने के लिए उकसाया। उदारवादी और रूढिवादी दल कोलम्बिया के पारम्परिक राजनीतिक संगठन रहे हैं। ये राष्ट्र को जन्म देने वाली स्वाधीनता शक्तियों (1810–1830) के उत्तराधिकारी हैं। स्वतन्त्रता से आज तक राष्ट्र–राज्य की रोजमर्रा की जिंदगी में हिंसा सन्निहित हो गई है। अकेले 1863 से 1886 के बीच नौ गृह युद्ध हुए, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में गुटीय झगड़ों और हिंसा की जड़े रखीं। डेनियल पिकॉट ने ऑर्डर एण्ड वायलेंस (व्यवस्था एवं हिंसा) में यह स्पष्ट रूप से समझाया कि हिंसा कैसे एक पीढ़ी से दूसरी से वर्तमान तक संप्रेषित होती है।

हिंसाशास्त्र ने अपने आप को कोलम्बिया के समाज विज्ञानों और कोलम्बियन इतिहास एवं समाज को समझने हेतु हिंसा के अपने अध्ययनों को समय और कार्य क्षेत्र के परे विस्तृत कर लिया है।

बहुत कुछ करना बाकी है : हमें ऐतिहासिक एवं नृवंशविज्ञान कृतियों का सृजन करना है जो कि रोजमर्रा की जिंदगी में सन्निहित हिंसा को समझना संभव करेंगे। मेरा काम इस नियत कार्य में योगदान के रूप में नियोजित है।

ला वायोलेंस्या (La Violencia) द्वारा उत्पन्न सैन्य मुकाबलों ने न केवल देश को खून और आगजनी में बदल दिया है, बल्कि अत्याचारों की अत्यधिक बर्बरता ने हिंसा को रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बना दिया है।

>>

1960 और 1970 के दशक के शीत युद्ध के दौरान ला वायोलेंस्या के अंतर पर, विभिन्न समूहों ने मार्क्सवादी गुरिल्ला आंदोलन को स्थापित करने के लिए शस्त्र उठा लिए। इनमें से एक, उदारवादी दल के सैन्य गुट से निकला, FARC (कोलम्बियाई क्रांतिकारी सेना) आज भी सक्रिय है। दूसरी तरफ, अर्द्ध सेना बल, दोनों रूढिवादी दल सेना के पुनः सक्रिय होने तथा नशीली दवाओं के तस्करों द्वारा स्थापित सैनय दल और सुरक्षा के निजीकरण, से उत्पन्न हुए हैं। अंतहीन सशस्त्र संघर्ष और व्यवस्थित आतंक और अत्याचार की सैनिक–क्रिया की प्रकृति एवं मुकाबले ने बड़ी संख्या में विस्थापितों को पैदा किया है। हिंसा दैनिक जीवन में इतनी रच बस गयी है कि वह अंतरंग सम्बन्धों में हस्तक्षेप करती है और परिवारों के बीच और यहाँ तक अंदर भी कभी दूर न होने वाले विभाजन का कारण बनती है जिसकी वजह से दुखदायी चुप्पी जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है, उत्पन्न होती है।

अब मैं अपने शोध के पन्ना क्षेत्र की ओर उन्मुख होता हूं कि पूर्वी एन्डीज के अलग–थलग क्षेत्र में स्थित है और जहाँ 80,000 निवासी चिक्वीनक्वीरा, जो कि बोयका विभाग की प्रादेशिक राजधानी है, से 40 कि. मी. दूर रहते हैं। सिर्फ दस वर्षों में, इस क्षेत्र ने कृषक अर्थव्यवस्था से खनन् अर्थव्यवस्था में गुजरने की प्रक्रिया का अनुभव किया है। इसने उन थोड़े निवासियों के लिये जो मूल्यवान पन्ने की तलाश में खानों में गये थे के लिए अत्यधिक धन संपदा पैदा की है। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के रूपांतरण में नये नातेदारी गठबन्धनों के उभरने से कृषक पारिवारिक समूहों में दरार डाली है। पन्ना व्यवसाय में सर्वाधिक सक्रिय परिवारों में इन नये संबंधों ने उसी पारिवारिक व्यापार में उद्यमी और सुरक्षा चौकीदारों के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया है। इसने माफिया परिवारों को कृषक परम्पराओं के साथ संगठित किया है, जहाँ परिवार, इज्जत, खून और वफादारी के मूल्य अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए मूलभूत हैं। ऐसा ऐन्टन ब्लोक अपनी कृति 'द माफिया आफ अ सिसिलियन विलेज, अ स्टडी आफ वायलेंट पेजन्ट ऐन्ट्रेप्रेन्योरस्' (The Mafia of a Sicilian Village, A Study of Violent Peasant Entrepreneurs) (1860–1960) में वर्णन करते हैं।

चूंकि कोलम्बियाई राज्य खानों को पन्नों की तलाश करते हिंसक निवासियों से बचाने और प्रशासित करने में विफल रहे, 1970 के दशक में खानें बॉस्, गॉडफादर या डॉन, जैसा कि वे स्थानीय भाषा में कहलाते थे, द्वारा हड़प ली गईं। 1960 और 1991 की अवधि में दो ''पन्ना युद्ध'' भी हुए, जिसमें बॉसेस ने खनन शोषण के नियन्त्रण के लिए लड़ाई लड़ी। इसके फलस्वरूप, इस क्षेत्र में 5000 लोग मारे गये। युद्ध की समाप्ति 1991 में बचने वाले डॉनों के बीच शांति संधि के मानने से हुई। पन्ना व्यापारियों के बीच संघर्ष किसी भी तरह गायब नहीं हुए हैं और इसके साथ हमें नशीली दवाओं के तस्कर और अर्द्ध–सैन्य बलों की प्रकटन को भी जोड़ना है। इस क्षेत्र में आने वाले तत्वों ने इन नियंत्रण वाले परिवारों को अवैध अर्थव्यवस्था और निजी सेनाओं के संपर्क में ला दिया है जिसने हिंसा की अन्तर्निहित संस्कृति को तीव्र कर दिया है।

इसी प्रकार के समान लक्षण कोलम्बिया के अन्य क्षेत्रों में भी पाये जाते हैं। हिंसा अत्यन्त निजी क्षेत्रों में, घरेलू सम्बन्ध और बच्चों के लालन पालन, में भी घुस गई है जो आर्थिक समृद्धि का और राज्य नियंत्रण की अनुपस्थिति का फल है। यद्यपि यह नैतिक एवं राजनीतिक रूप से हतोत्साहित करने वाला है, यह समाज विज्ञानों के क्षेत्र कार्य द्वारा संघर्ष के प्रतिमानों को राज्य हस्तक्षेप की आवश्यकता पर बल देते हुए, समझना और प्रसार करने की आवश्यकता की महत्ता पर भी जोर देता है। ■

> कोलम्बिया में भूमि प्रत्यर्पण

नादिया माग्रेरीटा रोड्रिग्ज, रोजेरियो विश्वविद्यालय, बोगोटा, कोलम्बिया

इस वृद्ध व्यक्ति जैसे चालीस लाख से अधिक कोलम्बिया के किसानों को पिछले पन्द्रह वर्षों में अपनी जमीनों को छोडने के लिए बाध्य किया गया है। फोटो : जूलियन वासेक।

कोलम्बिया में नियम 1448, जो कि 10 जून, 2011 को पीड़ितों का नियम से जाना गया, लागू होने के साथ ही भूमि प्रत्यर्पण पर विवाद प्रारम्भ हो गया। यह एक ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हुआ था जिसने भूमि प्रत्यर्पण से ओतप्रोत प्रचुर मात्रा में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और नैतिक चुनौतियाँ प्रदान की और सैनिक विवाद को सार्वजनिक रूप से सरकार ने स्वीकार किया। विशेष रूप से तृतीय अध्याय किसानों के भूमि प्रत्यर्पण से सम्बन्धित है, जोकि कोलम्बिया में पिछले 50 वर्षों से चल रहे सैनिक विवाद के कारण गत दो दशकों से अपनी भूमि से बेदखल कर दिये गये थे। यह अध्याय इसलिए भी विवाद में रहा है क्योंकि सरकार ने पिछले 50 वर्षों से इस मसले को नजर अंदाज करके इसका एक प्रकार से समर्थन ही किया। सभी प्रयासों के बावजूद भी भूमि प्रत्यर्पण नियम को लागू करने में असंख्य बाधाऐं हैं।

कोलम्बिया में भूमि प्रत्यर्पण मसला भूमि स्वामित्व के ऊँचे संकेन्द्रण से समझना चाहिए, जो कि ग्रामीण विकास की एक प्रमुख समस्या भी मानी जाती है। कई विश्लेषणकर्ताओं का यह तर्क है कि भूमि, स्वामित्व का ऊँचा संकेन्द्रन सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक विषमताओं का ही एक मात्र आधार नहीं है, बल्कि यह कोलम्बिया में खूनी विवाद का भी प्रमुख स्त्रोत है (फजारदो 2002, मैकादो 2009, पीएनयूडी 2011)। भूमि संकेन्द्रन ने द्वि

>>

प्रतिमान कृषि संरचना को जन्म दिया, जिसके अन्तर्गत आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से श्रेष्ठ एक छोटे समूह के पास उत्पादक जमीन का संग्रहण हो गया।[1] यह संरचना ब्रिटिश काल से ही प्रभुत्व में रही और बाद में ओर अधिक विकृत एवं विकराल होती गयी। गत शताब्दी, विशेष कर 1936 और 1961 के असफल कृषि सुधारों (मोलिना, 2006:36) के परिणामस्वरूप 1960 में उदय हुये सैनिक समूहों ने भूमि के पुनः आवंटन की मांग करना प्रारम्भ कर दी। अतः ग्रामीण कोलम्बिया का बहुत बड़ा भाग अर्द्ध–स्थायी संकट की अवस्था में है, जिसके अन्तर्गत वैधानिक एवं गैर–वैधानिक शक्तियाँ अधिकतम क्षेत्र पर नियन्त्रण करने के लिए युद्ध में संलिप्त हो गई, इसके परिणामस्वरूप 40 लाख किसानों का क्रमबद्ध, उग्र एवं भारी विस्थापन हुआ। अतः भूमि प्रत्यर्पण के अधीन संस्थाओं के समक्ष चुनौतियाँ अत्यधिक प्रबल अनुपात में है।

वैधानिक सीमाओं और सामाजिक संदर्भ दोनों के ही अन्तर्गत भूमि प्रत्यर्पण की स्थितियां बहुत कठीन हैं। रोजेरियो विश्वविद्यालय के सामाजिक विकास अध्ययन केन्द्र ने इस नियम को लागू करने में आने वाली कठिनाईयों को समझने के लिए अन्तर विषयक (वैधानिक एवं सामाजिक विज्ञान) दृष्टिकोण अपनाया।इस प्रोजेक्ट का एक भाग वैधानिक प्रत्यर्पण[2] की ईकाई के शोध के संदर्भ में है जो कि अपने–आप में निम्न पाँच कठीन मुद्दों के संदर्भ में शोध से सम्बन्धित है:–

– प्रथम, भूमि प्रत्यर्पण क्षेत्रों में सैनिक विवाद जारी रहा, जिसके कारण सरकार किसानों को यह भरोसा दिलाने में असमर्थ रही कि उन्हें पुनः भूमिविहीन नहीं किया जायेगा। कोलम्बिया सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती सैनिक विवाद को खत्म कर किसानों को सुरक्षा प्रदान करना है।

– द्वितीय, नियमानुसार प्रत्यर्पण को क्षतिपूर्ति के रूप में परिभाषित किया गया है, इसमें भूमि एवं व्यक्ति द्वारा हुई क्षति को भरपाई के लिए कोई प्रावधान नहीं है। अतः यह पूर्वस्थिति को पुनः स्थापित करने में असमर्थ है। अतः इस नीति को भूमि पर पुनः अधिकार दिलवाने तक सीमित नहीं कर सकते, बल्कि इस नीति द्वारा यह भी संभव होना चाहिये कि लोग भूमि पर सम्मान के साथ रह सकें। भूमि विस्थापन के कारण विस्थापितों के मानवाधिकारों का हनन हुआ है जिसनें विस्थापितों को गहरे सदमें में पहुँचा दिया है। अतः विस्थापितों के लिए भूमि पर पुनः स्थापित होना कठिन हो गया है। संक्षेप में पीड़ितों को वैधानिक दायरे के अतिरिक्त भी सहायता की आवश्यकता है।

– तृतीय, अपनी भूमि से विस्थापित किसान जो कि वर्तमान में शहरों में रह रहे हैं, शायद ही पुनः ग्रामीण क्षेत्रों में जाना चाहेंगे यह मानते हुये कि गाँवों एवं शहरों के मध्य में विकास, स्वास्थ्य एवं शिक्षा में बहुत अधिक विषमता पाई जाती है। भूमि विस्थापन ने किसानों के सामाजिक ताने बाने को खण्डित कर दिया है और अब उनके लिए उसकी पुनः संरचना करना बड़ा कठिन है।

– चतुर्थ, अगर जमीन पर काबिज भूस्वामियों जो कि अधिकतर कृषि – औद्योगिक कम्पनियां हैं को ही वापस जमीन किराये पर देने अथवा बेचने से बचाना है तो जमीन के मालिकों को आर्थिक, तकनीकी एवं उत्पादकता सहयोग प्रदान करना आवश्यक होगा।

– पंचम, वैधानिक एवं संस्थागत चुनौतियों जैसे–भूमि प्रत्यर्पण के लिए लोक सेवकों को प्रशिक्षण और कृषिगत मसले को निपटाने के लिये नियुक्त जजों का प्रशिक्षण (कोलम्बिया में इस प्रकार के जजों का अभाव है) इत्यादि का ध्यान रखना होगा। सरकार को यह सिद्ध करना होगा कि वास्तव में भूमि का अनाधिकृत ग्रहण हुआ है। यहाँ महत्वपूर्ण प्रश्न पैदा होता है कि सरकार कैसे उस भूमि को प्राप्त करेगी, जिसको पुनः विस्थापितों को देना चाहती है, जबकि वर्तमान में यह भूमि दूसरे लोगों के नियन्त्रण में है और नियम भूमि खरीददारों को बरी करता है।

अन्ततः यह एक विस्तृत संरचनात्मक राजनैतिक समस्या है : क्षेत्रों पर नियन्त्रण करने के लिए राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय श्रेष्ठ वर्गों में विवाद, भूमि के आन्तरिक एवं बाह्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में आर्थिक रूचियों के लिए झगड़े। भूमि प्रत्यर्पण के कुछ विशिष्ट उदाहरण जैसे कुर्बाराडो, जिगुआमिन्डो अथवा हैसिएन्डा लास पावास (Curbaradó, Jiguamindó or Hacienda Las Pavas) ऐसे है, जहाँ वैधानिक चुनौतियां हल करने के बावजूद भी स्थानीय स्तर पर ऐसी शक्ति संरचना होती है, जो कि भूमि प्रत्यर्पण की प्रक्रिया को रोक देती है। ■

1.भूमि का जिनि सूचकांक (Gini index) ग्रामीण भूमि के संकेन्द्रण अंश का मापन करता है। संकेन्द्रण उतना ही अधिक होगा जितना कि वो संख्या एक के नजदीक होगा। 0.87 पर कोलम्बियन सूचकांक विश्व मे उच्चतम पर सम्मिलित है।

2. भूमि प्रत्यर्पण को लागू करने के लिए कानून द्वारा इस संस्था का निर्माण किया गया है। इससे पहले यह भूमि एवं बेदखल लोगों की सुरक्षा के कार्यक्रम Program for the Protection of Land Dispossessed People (PPTP) के रुप में अस्तित्व में था, यद्यपि इसकी गत्यात्मकता एवम लक्ष्य भिन्न थे और इसके साथ वो कोई भी राजनैतिक एवं कानूनी सहारा नहीं था जैसा कि इस इकाई के साथ आज है।

References

Fajardo, D. (2002) *Para sembrar la paz hay que aflojar la tierra*. Bogotá: Universidad Nacional de Colombia.

Machado, A. (2009) *La reforma rural, una deuda social y política*. Bogotá: Universidad Nacional de Colombia, CID.

Molina, P. (2000) "Reforma agraria? No es tan claro para qué el país la necesita." *Economía Colombiana* 278: 34-7.

PNUD (2011) *Colombia Rural: Razones para la esperanza. Informe de desarrollo humano 2011*. Bogotá: INDH PNUD.

> चिली में छात्र आंदोलन

मिल्टन एल. विडाल, एकेडेमिक यूनिवर्सिटी ऑफ क्रिश्चियन ह्यूमेनिज्म, सेनटिआगो, चिली

नव्यउदारवाद के विरुद्ध चिली के विद्यार्थियों का आन्दोलनः ''हमारा भविष्य बेचने के लिए नहीं है।''

चिली सूदूर दक्षिण में एक छोटा देश है। विश्व कार्टोग्राफी के प्रभावशाली दृष्टिकोण के अनुसार, आप हमें दक्षिण अमरीका के अन्तिम छोर पर पायेंगे। यह स्थान समय–समय पर अन्तर्राष्ट्रीय सुर्खियों में आता है। 2011 में महाविद्यालयी और सैकेण्डरी विद्यालय के छात्रों द्वारा शुरू किया गया आंदोलन, पहले से ही सामाजिक विरोधों से पूर्ण, अंतर्राष्ट्रीय पटल पर अत्यधिक महत्वपूर्ण हुआ।

हम विश्व के सर्वाधिक असमान क्षेत्र का हिस्सा हैं। एक–तिहाई जनसंख्या गरीबी में रहती है और हिंसा के पुराने और नये स्वरूपों, अभद्रता, भ्रष्टाचार एवं दुर्लभ संसाधनों के अत्यधिक दोहन से प्रभावित है। इस संदर्भ में, पुरूष और स्त्री अपने स्वप्नों के लिये, अपने मौलिक अधिकारों के लिए इज्जत की मांग, सरकार द्वारा वादों को पूरा करने की मांग एवं जनसाधारण के भले के लिए निर्णय लेने के लिए, विभिन्न तरीकों द्वारा लड़ने के लिए स्वयं को संगठित करते हैं। ऐसा चिली के लिए भी सत्य है। ऐसे कई असंतुष्टि के स्त्रोत हैं जो लेटिन अमरीकी लोगों को सड़कों पर उतरने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इनमें से कई सैकेण्डरी विद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक अधिकारों से कहीं अधिक गंभीर हैं। यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह दक्षिणी देश, 1970 के दशक के मध्य से, विशेषतः महाविद्यालयी शिक्षा के सम्बन्ध में, लेटिन अमरीकी सरकारों द्वारा लागू की गई मुख्य नवउदारवादी नीतियों का प्रेरणा स्त्रोत और शुरूआती बिन्दु था।

फिर कैसे ये विरोध चिली में शुरू हुए? क्यों ये हमारे देश में अधिकांश लोगों द्वारा वैध माने गये? सरल रूप में, नव–उदारवादी वादे अचानक तितर–बीतर हो गये। वास्तव में, सभी के लिये महाविद्यालयी शिक्षा उपलब्ध कराने के वादे ने सबसे खराब मोड़ ले लियाः नामांकन में वृद्धि उसी सीमा तक सम्भव थी, जहाँ तक छात्र और उनके परिवार ऋणग्रस्त हुए। चिली में विश्वविद्यालय शुल्क विश्व में सबसे ज्यादा है और अधिकतर उधार द्वारा

>>

चुकाया जाता है। समाजशास्त्रीय भाषा में, एक ऐसा देश जहाँ आय का वितरण क्रूर रूप से असमान है, वहाँ यह विशेष रूप से महत्व पूर्ण है कि उच्च शिक्षा को सार्वजनिक हित और सामाजिक गतिशीलता में निर्णायक कारक के रूप में देखा जाए।

इन परिवारों के उच्च शिक्षा में निजी निवेश का प्रतिफल लेटिन अमरीका में सर्वाधिक है और विश्वविद्यालय शुल्क फिर भी बढ़ रहे हैं। इस वृद्धि पर रोक परिवार की क्रय शक्ति द्वारा लगाई जायेगी। कुल मिला कर, अपेक्षाकृत अमीर सबसे अच्छी मौलिक/आधारभूत शिक्षा (प्रारंभिक और सैकेण्डरी) के लिये भुगतान करते हैं और सबसे अच्छे विश्वविद्यालयों से लाभ प्राप्त करते हैं। (परीक्षा अंक/या क्रय शक्ति के आधार पर प्रवेश) जबकि कम संसाधन और मध्य दर्जे की आधारभूत शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को ऊँची लागत के साथ संदिग्ध संस्थानों में प्रवेश के लिए काफी त्याग करना पड़ता है। अतः बेहतर शिक्षा के लिए आवाज उठाना सामाजिक असमानता के खिलाफ कथन जैसा है।

कईयों को आश्चर्यचकित करते हुए, विद्यार्थियों द्वारा सार्वजनिक शिक्षा के पक्ष में चलया गया सामाजिक आंदोलन न सिर्फ चला बल्कि हफ्ते दर हफ्ते अधिक ताकतवर होता गया। माँगों की अन्तर्वस्तु, गतिशील और वैध सामाजिक दबाब/शक्ति, विकसित अंतर्राष्ट्रीय सृदढ़ता सिर्फ चिली तक सीमित नहीं रहे। सार्वजनिक शिक्षा के पक्ष में चलाये गये आंदोलन उरुग्वे, बोलिविया ब्राजील, प्यूरटो रिको, इक्वेडोर और कोलम्बिया में भी सफल रहे हैं। हालाँकि, चिली के मामले की कुछ विशेषताएँ अंतर्राष्ट्रीय चर्चा और प्रतिक्रिया के लिए लाभदायक है।

पहला, विश्वविद्यालय सामाजिक जीवन का अभी भी बेरोमीटर है। इस ऐतिहासिक स्थिरता पर हठ करना शायद सरल हो सकता है परन्तु यह अधिकतर विस्मृत कर दिया जाता है। वे राजनीतिज्ञ जिन्हें विश्वविद्यालयों के गहन सुधार करने चाहिए, वे उनमें विलम्ब करते हैं क्योंकि वे उच्च शिक्षा को सीमांतीय मुद्दा मानते हैं जबकि आर्थिक नेतृत्व सोचता है कि उच्च शिक्षा में घाटे को सार्वजनिक क्षेत्र, बैंक, परिवारों या फिर उपरोक्त सभी स्त्रोतों से संसाधनों को जुटाने से दूर किया जा सकता है। यह बहुत बड़ी गलती है। विश्वविद्यालय हमेशा से ही नीतिगत क्षेत्र से अधिक रहे हैं। सभी मुख्य परिवर्तन कहीं न कहीं विश्वविद्यालयों से जुड़े हैं। चाहे हम नेबुचाडनेजार (Nebuchadnezzar) के पारसी साम्राज्य से यहूदियों के निर्वासन की सोचें अथवा प्लेटो की अकादमी में राजनैतिक बहस, लूथर के वाद के साथ प्रोटेस्टेंट सुधार के पूर्व बहस और बाइबल का जर्मन भाषा में अनुवाद, जेनेवा विश्वविद्यालय में केल्विनवाद के होनें, खैमेनी पूर्व और पश्चात् का ईरान, लोक गणराज्य, सांस्कृतिक आंदोलन या टियानेनमेन स्केअर के पूर्व का चीन, लाटेलोल्को नरसंहार के पूर्व और पश्चात् का मेक्सिको के बारे में सोचें, विश्वविद्यालय बड़े राजनैतिक एवं सामाजिक महत्व की वैश्विक संस्थाएँ हैं और रहेंगी। अतः उन्हे हमेशा समाजशास्त्रीय आकर्षण/ध्यान की मुख्य इकाई होना चाहिए।

दूसरा, सभी स्तरों पर शिक्षा, विशेष्ज्ञ रूप से महाविद्यालय स्तर पर, राज्य और बाजार के बीच ध्रुवीकृत तनाव पर आश्रित नहीं मानी जा सकती। बहुत समय पहले हम्बोल्ट ने सही कहा था कि राज्य हस्तक्षेप शिक्षा के रास्ते में आ जाता है। लेटिन अमरीकीयों को मालूम है कि राज्य हमेशा शक्ति का प्रतीक है जो अपने आप को नौकरशाही के माध्यम से व्यक्त करता है। शिक्षा के समाजशास्त्री जानते हैं कि सुधारों का सबसे कठिन कार्य उनको लागू करना है। फिर भी, हम्बोल्ट भी तर्क देते हैं कि हम राज्य को पूर्णतया नहीं हटा सकते हैं। हमें यह मांग करनी चाहिए कि शिक्षा की संस्थागत व्यवस्थाओं की गारण्टी राज्य है। हमें विश्वविद्यालयों को व्यक्तिगत हितों के लिये युद्धस्थल बनने से भी रोकना होगा। इस अर्थ में, शिक्षा सार्वजनिक हित है और विश्वविद्यालय सार्वजनिक संस्थाएँ हैं, चाहे वो निजी कोष से पोषित हो। डिप्लोमा प्रदान करने की उनकी काबलियत/क्षमता समाज के उन पर विश्वास पर आधारित है।

तीसरा, चिली का, और अधिक सामान्य रूप से लेटिन अमरीका का छात्र आंदोलन शिक्षा के वस्तुकरण को नकारता/अस्वीकार करता है। बाजार व्यवस्था का संगठित तर्क वैज्ञानिक प्रशिक्षण के सामने असंगत है। चलिये हम छात्रों और प्रोफेसरों के बीच सम्बन्धों को और निकटता से अवलोकन करते हैं। शिक्षा हमेशा सामूहिक प्रयत्नों का परिणाम होती है। यह खरीदी नहीं जा सकती अतः इसका वस्तुकरण नहीं किया जा सकता। छात्र वैज्ञानिक गतिविधियों में सक्रिय भागेदारी के माध्यम से ही शिक्षित हो सकते हैं। इसीलिए हम उन्हें सेमीनार चर्चाओं में, रिपोर्ट लेखन में, शोध दल में शामिल होने, अन्य छात्रों के साथ अपने विचारों को साझा करने और उन पर बहस करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह विचार कि प्रोफेसर व छात्र, क्रेता और विक्रेता है, न सिर्फ भ्रमित करने वाला है (और इसे विचारधारा के कारणों के अलावा भी चुनौती देने की आवश्यकता है), यह शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने में बाधा भी उत्पन्न करता है। मुझे यह बहुत बुरा लगता है कि शैक्षणिक सहकर्मी इस विचार को मान लेते हैं कि उनके छात्र ग्राहक हैं। छात्रों को शैक्षणिक स्वतन्त्रता चाहिए जो उनके प्रोफेसर की स्वतन्त्रता पर निर्भर करती है। तथापि इस शैक्षणिक योग्यता का बाजार अर्थव्यवस्था द्वारा क्षरण होता है। यदि प्रोफेसरों को सेवा प्रदाता माना जायेगा, यानि कि उच्च शिक्षण संस्था के मालिक का कर्मचारी और उन पर आश्रित, तो फिर वे अपने विद्यार्थियों को अपने संकीर्ण स्वार्थों/हितों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करेंगे।

अंततः यह जरूर कहना चाहिए कि छात्र विरोध समाज, विश्वविद्यालय और समाजशास्त्रियों के लिये अच्छी खबर है। विश्वविद्यालय एक ऐसा स्थान है, जहाँ समाज स्वयं को शोध विषय में रूपांतरित करता है और इस प्रक्रिया में स्वयं को पुनः स्थापित करता है। इस स्व–जानकारी में हमेशा स्वार्थ और शक्ति संघर्ष रहा है जिसने शैक्षणिक स्वतन्त्रता को चुनौती दी है।हालाँकि, ये संघर्ष विश्वविद्यालयों को खत्म नहीं कर पाये हैं। हमें चिली और उसके अतिरिक्त लेटिन अमरीका में चिलि और विश्व के छात्र आंदोलन को इसी रूप में देखना चाहिए। मेरा मानना है कि आंदोलन का बना रहना लोकतांत्रिक समाज के लिए लाभदायक है। समाज और विश्वविद्यालय फिर इस छात्र आंदोलन से जुड़ते हैं, जिसके फलस्वरूप समाजशास्त्र को एक प्रेरणादायक संदर्भ मिलता है। वे लोग, जो कहते हैं कि समाजशास्त्रीय वृतान्त अवसान पर हैं, गलत है। विश्व के दक्षिणी भाग में समाजशास्त्र स्वस्थ अवस्था में है और मेरे धैर्यवान पाठकों, मैं आशा करता हूँ कि यह खबर आप को खुशी देगी। ■

[1]चिली OECD का एक उभरता हुआ देश है। इस संगठन के अनुसार चिली का गिनी सूचकांक (Gini score) 0.50 है जो कि इस श्रेणी के देशों में सबसे उच्च असमानता को दर्शाता है (Society at a Glance, Social Indicators, OECD, 2011)। इस बिन्दु को और अधिक इस प्रकार दर्शाया जा सकता है: चिली के 10 प्रतिशत सबसे अमीर व्यक्तियों की औसत आमदनी नार्वे से अधिक है जबकि सबसे गरीब 10 प्रतिशत की आईवरी कोस्ट जनसंख्या के समान है। बहुसंख्यक चिली के लोगों (60 प्रतिशत) की औसत आमदनी अंगोला के लोगों की आमदनी से नीचे है।

> बेरुत में कार्यकारिणी की बैठक

मार्च 19-23, 2012

माइकल बुरावे, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले तथा आई.एस.ए. के अध्यक्ष

लेबानीज स्वादिष्ट व्यंजनों को समाजशास्त्र में घोलते हुए आई.एस.ए. कार्यकारिणी के सदस्य। फोटोः मार्कस शुल्ज।

अमेरिकन विश्वविद्यालय, बेरुत (AUB) के समाजशास्त्र, मानवशास्त्र और मीडिया अध्ययन विभाग में पांच दिन तक चलने वाली आई.एस.ए. कार्य–कारिणी की बैठकों की मेजबानी प्रोफेसर सारी हनाफी और उनके सहयोगियों द्वारा उदारता पूर्वक की गई। हमारी दो दिन की मीटिंगं के दौरान ही एक शानदार अर्न्तराष्ट्रीय विचार गोष्ठि ''अरब बगावत'' (वैश्विक संवाद के इस अंक मे प्रतिवेदित) का भी आयोजन किया गया था जिसे अमेरिकन विश्वविद्यालय, बेरुत, लेबानीज् सोशियोलोजिकल एसोशिएशन तथा फ्रेड्रिक–एर्बट–स्टिफंग द्वारा प्रायोजित किया गया था तथा जिसमें सम्पूर्ण अरब जगत के वक्ताओं ने तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये।

यह पांच दिवसीय मैराथन अलग से होने वाली मीटिंगस् से शुरु हुईः उपाध्यक्ष राकेल सोसा की अध्यक्षता में योकोहामा कांग्रेस 2014 के लिए कार्यक्रम समिति की, उपाध्यक्ष जैनीफर प्लाट की अध्यक्षता में प्रकाशन समिति की, उपाध्यक्ष रार्बट वान क्राइकेन की अध्यक्षता में वित्त और सदस्यता समिति की, उपाध्यक्ष मारग्रेट अब्राहम की अध्यक्षता में अनुसंधान समन्वय समिति की, तथा राष्ट्रीय सम्पर्क समिति की मीटिंग इसकी उपाध्यक्ष टीना उईस की अध्यक्षता में आयोजित हुईं।

सप्ताह के अंत में दो दिन के लिए पूरी कार्यकारी समिति की बैठकें हुईं मैनें विश्व के अनेक भागों में किये गयं अपने दौरों का और साथ ही वर्ष भर में आई.एस.ए. की ऑन लाईन प्रगति पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। हमारा एक अत्यावशयक कार्य आई.एस.ए. की अगली विश्व कॉग्रेस कहां पर आयोजित की जाय

>>

यह तय करना था। बुडापेस्ट, कोपनहेगन, मैलर्बन, जारागोजा, और टोरंटो से हमारे पास पांच उतकृष्ट निविदाऐं थी। हमनें प्रथमदृष्टया दो – टोरंटो और जारागोजा – को सूचीबद्ध किया और पहले वाले स्थान को देखनें के बाद तक अन्तिम निर्णय करना तय किया। हमनें अर्न्तराष्ट्रीय विज्ञान परिषद (ICSU) की सदस्यता लेनें का निर्णय लिया। एक उपसमिति के प्रतिवेदन पर आधारित आई. एस.ए. के इनाम तथा पारितोषिक लागू करने की संभावना पर भी हमने विचार किया और तय किया कि एक अर्न्तराष्ट्रीय इनाम, जो कि समाजशास्त्र पर शोध व व्यवहार को पहचान देने वाला हो, के विवरण पाने के प्रयत्न किये जाएं। यहां हम प्रत्येक उपाध्यक्ष के प्रतिवेदनों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

> मारग्रेट अब्राहम, उपाध्यक्ष शोध

अनुसंधान समन्वय समिति (आरसीसी) की बेरुत में एक अन्यंत उत्पादक बैठक हुई। हमनें निम्न प्रंतिवेदनों पर चर्चा की: शांध समितियों तथा विषयगत और कार्यसमूहों के विधानों का पुनरीक्षण, 2006 से 2010 के दौरान आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज की कार्यवाहीयां, और ब्यूनस आर्यस मे अगस्त 2012 में द्वितिय आई. एस.ए. फोरम पर।

बैठकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आने वाले फोरम की तैयारियों पर चर्चा को समर्पित था। हमनें 693 सत्रों (जिनमे 51 स्पैनिश में हैं) के लिए 7928 लेखकों के 6019 सारांश प्राप्त किये। हमने ये प्रस्तुतियां सारे विश्व से प्राप्त कीं जिसमें लैटिन अमेरिका का प्रतिनिधित्व मजबूत (3528 अथवा 45 प्रतिशत) था।

यद्यपि हम उच्च भागीदारी की आशा करते हैं परन्तु मुश्किल आर्थिक वातावरण के कारण यह संख्या कम हो सकती है। मैं सेज (SAGE) के साथ एक खुली पहुँच वाले अभासी स्पेस बनाने पर कार्य कर रहा हूं जो कि फोरम के विषय – सामाजिक न्याय तथा प्रजातान्त्रिकरण से संबद्ध ज्ञान और शोध के मामलों का प्रचार और विनिमय कर सके। इस पर अधिक जानकारी शीघ्र ही जारी की जायेगी।

आरसी/डब्लुजी/टीजी के विधानों के पुनरीक्षण के प्रतिवेदन तथा चर्चा में यह ध्यान में लाया गया कि कुछ आरसी/डब्लुजी/टीजी को अभी अपनें विधानों के पुनरीक्षण प्रस्तुत करने हैं। ये पुनरीक्षण आगामी चुनावों से पहले पूरे किये जाने हैं। हमनें यह भी चर्चा की कि आरसी/ डब्लुजी/ टीजी के मंडल (बोर्ड) के संगठन को समीक्षा की आवश्यकता है विषेशतः कार्यकाल की समयावधि को लेकर। कुछ मंडलों को नए सदस्यों, जो कि आगामी चुनावों में चुन कर आ सकें, की तलाश में क्रियात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है

आरसीसी नें अनुदान आवेदनों की समीक्षा की। 2011 में अटठारह आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज को कुल 16,900 अमेरिकन डालर आबंटित किये गये थे और 2012 में तेरह आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज को 8660 यूरो जैनिफर प्लाट, उपाध्यक्ष शोध ने शोध समितियों के जर्नल्स् के लिए दिशा निर्देश जारी किये जो कि अब ऑन लाईन उपलब्ध हैं: http://www.isa-sociology.org/about/rc_aims.htm.

अन्त में आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज के द्वारा प्रस्तुत 2006–2008 और 2008–2010 की कार्यवाही प्रतिवेदनों की समीक्षा और चर्चा की गई। अधिकांश आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज कार्यशील थीं, उन्होनें सम्मेलन आयोजित किये, न्यूजलैटर प्रकाशित किये तथा अन्य प्रोफेशनल गतिविधियां कीं। आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज के आंकडे. अधिक कुशलतापूर्वक तथा लगातार लिये जा सकें इस लिए आरसीज्, टीजीज् और डब्लूजीज की गतिविधियों के प्रारुप को नई तरह से पुनः डिजाईन किया गया है।

> जैनीफर प्लाट, उपाध्यक्ष प्रकाशन

सुजाता पटेल, संपादक सेज स्टडीज इन इन्टरनेशनल सोशियोलाजी (एसएसआईएस) ने सेज पब्लिशर्स के साथ भारत मे पुस्तकें छपवाना, आइ.एस.ए. के सदस्यों और तृतिय विश्व के खरीददारों के लिए भारतीय कीमतों पर बिक्री पर अपनी स्वीकृति दे दी है हालांकि बडी जिल्द वाली पुस्तकें अभी भी पश्चिमी पुस्तकालयों और पश्चिमी कीमतों पर उपलब्ध होंगी। यह प्रस्ताव गर्मजोशी से पारित हुआ।

करण्ट सोशियोलोजी (सीएस) अथवा इन्टरनेशनल सोशियोलोजी के किसी भी लेख जो कि उनकी विषेश रुचि का है के पुर्नमुद्रण के अवसर राष्ट्रीय सघों को बिना किसी शुल्क भुगतान के प्रदान किये जाने पर सहमति दी गई। सीएस प्रतिवर्ष एक अतिरिक्त अंक प्रकाशित करेगा जिसमें सोशियोपीडिया से लिए गये लेखों की समीक्षाऐं होंगी।

यह नीति भी स्वीकृत की गई कि शोध पत्रिकाओं के संपादक और उपाध्यक्ष प्रकाशन से सम्बन्धित किसी न किसी गतिविधि को आई.एस.ए. के प्रत्येक आयोजन के अवसर पर अवश्य आयोजित करेंगें, जैसे कि ''संपादकों से मिलिए'' सत्र, जर्नल में लेख लिखने पर कार्यशाला, अथवा स्थानीय सम्पादकों से मिलने के कार्यक्रम। हमारी शोध पत्रिकाओं को प्रचारित करने के लिए वे प्रति वर्ष महत्वपूर्ण सम्मेलनों में भाग लेंगें तथा नए घटनाक्रमों को देख सकेगें तथा नए लेखकों, निर्णायकगण तथा पुस्तक समीक्षकों की नियुक्तियां कर सकेगें।

> राकेल सोसा, उपाध्यक्ष कार्यक्रम

यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि योकोहामा कांग्रेस (2014) के लिए कार्यक्रम समिति की बैठक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। कांग्रेस का मुख्य विषय असमान विश्व से मुकाबला: समाजशास्त्र के लिए चुनौतियां है। हमने पहले ही लेखों और सत्र व्यवस्थापकों के लिए आमन्त्रण जारी कर दिये हैं जिसकी अन्तिम तिथि 15 जनवरी 2013 है। यह आई.एस.ए. की वैब साइट http://www.isa-sociology.org/congress2014/ पर देखी जा सकती है। हम तदर्थ और एकीकृत सत्रों तथा लेखकों से मिलिये जैसे समीक्षात्मक सत्रों के प्रस्ताव प्राप्त करने के इच्छुक हैं। हम चाहेंगे कि सदस्य इस असाधारण अवसर पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें जो कि अपने समय की सर्वाधिक लोकोत्तर अर्न्तराष्ट्रीय बहस बन चुकी है। हम आशा करते हैं कि हमारी योकोहामा कांग्रेस ज्ञान तथा सामाजिक अनुशीलन में महत्वपूर्ण योगदान करेगी जैसा कि बहुत से आई.एस.ए. के सदस्यों ने गरीबी, असमानता, तथा अन्याय से सम्बन्धित प्रश्नों पर कार्य करने में अपनी पेशेगत जिन्दगीयां अर्पित की है।

निम्न विषयों पर दस अर्ध–पूर्ण सत्र तैयार करनें पर अपनी सहमति दी है: संरचनात्मक असमानताओं के विन्यास; असमानता तथा शक्ति की संरचनाऐं; उत्पादन और असमानता का व्यवहार; असमानताओं के सामाजिक जख्म; विभिन्न ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं में न्याय की अवधारणाऐं; न्याय तथा सामाजिक व्यवस्थाऐं; असमानताओं पर काबू पाना; कर्ता तथा अनुभव; पर्यावरणीय न्याय तथा दीर्घकालिक भविष्य; समाजशास्त्र तथा असमानताऐं। भागीदार समस्त विश्व तथा विविध परंम्पराओं से आयेंगें। हम आशा करते हैं कि इन अर्ध–पूर्ण सत्रों तथा अध्यक्षीय और स्थानीय संगठन समिति के सत्र हमारे सहयोगी तथा योगदान कर्ता 21वीं सदी में विश्व के समाजविज्ञानों के नवीनीकरण को आकर्षित करेंगे ।

>>

> टीना उईस, उपाध्यक्ष राष्ट्रीय परिषद

हमने आई.एस.ए. की नियमित सामुहिक सदस्यता के आधारों पर चर्चा की तथा उन्हें स्पष्ठ किया। आई.एस.ए. की कार्यप्रणाली के अनुसार नियमित सामुहिक सदस्य राष्ट्रीय परिषदों की सम्पर्क समिति तथा वित्त एवं सदस्यता समिति की सिफारिशों के बाद आई.एस.ए. की कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत किये जाते हैं। एक नियमित सामुहिक सदस्य के विधान उसी प्रकार के होने चाहिए जैसे कि आई.एस.ए. के विधान के आर्टीकल 1 तथा 2 के हैं।

- नियमित सामुहिक सदस्य आवश्यक रुप से एक लाभ रहित संगठन होना चाहिये जो कि वैज्ञानिक उद्धेश्यों के लिए हों तथा समाजशास्त्रियों का प्रतिनिधित्व करता हो बिना इस बात की परवाह किये कि वे किस सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण या विचारधारा के हैं।
- नियमित सामुहिक सदस्यों का लक्ष्य समाजशास्त्रीय ज्ञान को आगे बढाना है। उनकी संरचना इस प्रकार की जानी चाहिये कि वे समाजशास्त्रियों की समाजशास्त्र का मुक्त विकास करनें की महत्वाकाक्षांओ तथा प्रयत्नों को विभिन्न गतिविधियों जैसे कि सम्मेलनों के आयोजन / मेजबानी तथा प्रकाशनों को बढावा देने के माध्यम से समर्थन तथा मजबूती प्रदान करते हों।
- नियमित सामुहिक सदस्यों के पदाधिकारी एक नियमित प्रजातान्त्रिक प्रणली से चुने जाने चहियें।

हमने उस नई प्रक्रिया को सुनिश्चित किया जिसके तहत उन प्रार्थनापत्रों पर विचार किया जा सके जो कि कार्यकारिणि समिति की वार्षिक बैठकों के मध्य प्राप्त होती हैं। स्लोवियन सोशल साइन्स एसोशिएशन ने नियमित सामुहिक सदस्यता के लिए 2011 के द्वितिय अर्ध में आवेदन किया। इस एसोशिएशन का मुल्यांकन एक आन–लाइन प्रक्रिया के द्वारा करने के बाद इसे अनुमोदित कर दिया गया। यूगाण्डा समाजशास्त्रीय तथा मानवशास्त्रीय संघ के आवेदन को बैठक के दौरान अनुमोदित किया गया। आई.एस.ए. के साथ अब 60 नियमित सामुहिक सदस्य हैं लेकिन उनमें से सभी नें अपने सदस्यता शुल्क नहीं चुका रखे हैं इसलिए अफसोस है कि उनकी सदस्यता पूर्ण नहीं है।

राष्ट्रीय परिषदों की सम्पर्क समिति की 2011 में मैक्सिको की बैठक में स्थापित मानदण्डों के आधार पर बंग्लादेश, बुल्गारिया, मोजाम्बिक तथा फिलिपीन्स की समाजशास्त्रीय एसोशिएशन्स को क्षेत्रीय कार्यशाला अनुदान प्रदान किये गये । बंग्लादेश और मोजाम्बिक ने वैबसाइट के विकास के लिए भी अनुदान प्राप्त किया।

काउन्सिल आफ नेशनल एसोशिएशन की कान्फ्रेन्स की योजना शक्ल ले रही हैं। कान्फ्रेन्स अंकारा, टर्की में मई 2013 में होने जा रही है। कान्फ्रेन्स का मुख्य विषय होगा खलबली / अशांति के समय में समाजशास्त्रः तुलनात्मक उपागम (Sociology in Times of Turmoil: Comparative Approaches) मध्यपूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग, टर्किश समाज विज्ञान संघ तथा टर्किश समाजशास्त्रीय एसोशिएशन सामुहिक रुप से इसका आयोजन करेंगें।

> राबर्ट वान क्राइकेन, उपाध्यक्ष वित्त तथा सदस्यता

वित्त तथा सदस्यता समिति ने अपने प्रतिवेदन में बतलाया कि धीरे धीरे बढने वाली निजी सदस्यता अब 5000 के थोडी उपर आ गई है। आजीवन सदस्यता शुल्क को जो कि अभी 300 यूरो है, समिति अब इस शुल्क में राष्ट्रों की श्रेणी के अनुसार अन्तर करना प्रस्तावित करती हैः श्रेणी ए–300 यूरो, श्रेणी बी–200 यूरो, तथा श्रेणी सी–100 यूरो, जो कि अब केवल योकोहामा विश्व कांग्रेस 2014 में ही किया जा सकता है। हमने सदस्यों द्वारा आई.एस.ए. को वैबसाइट के द्वारा दान देना और आसान बनाने के लिए तथा अधिक दान और उपहार देने को आकर्षित करने के नये तरीके खोजने की सिफारिश की है।

सदस्यों को उपलब्ध करवाने हेतु हमनें 2010 व 2011 के वित्तिय विवरणों के सारांश उपलब्ध करवाये, साथ ही अतिरिक्त वित्त जुटाने के निवेदन के लिए 2010–2014 के बजट विवरण पर बहस के प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किये। हमारी समग्र वित्तिय स्थिति स्वस्थ है। आई.एस.ए. की गतिविधियों मे बढोतरी के कारण हमारे स्टाफ तथा खर्चों में महत्व पूर्ण वृद्धि हुई है, लेकिन सेज (Sage) के साथ पुर्ननवीनीकृत अनुबन्ध जो कि 2011 में किया गया था से यह सब समायोजित किया जा सका है। वैश्विक संवाद, समाजशास्त्रीय यात्राऐं, तथा सम्पादकों के यात्रा खर्चों के लिए अतिरिक्त धन की व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की गई।

> अन्य विषय

हमें कोईची हासेगावा, आई.एस.ए. की विश्व कांग्रेस योकोहामा (2014) की स्थानीय संगठन समिति के प्रमुख से एक उत्साहवर्धक प्रतिवेदन प्राप्त हुआ है। हमने इस प्रतिवेदन पर हमारे संयुक्त राष्ट्र प्रतिनिधियों (यान फ्रिट्ज, रुडोल्फ रिट्चर, रोजमेरी बारबेरेट, तथा हिल्ड जैक्सन), कानून पर समाजशास्त्र के अर्न्तराष्ट्रीय संस्थान (रामोन फ्लेचा), तथा ग्लोबल डवलपमेन्ट नेटवर्क (एमा पोरियो) के साथ विचार विमर्श किया । हमनें चिन–चुन यू से 2012 की ताईपेई की पीएच.डी. विद्यार्थियों की लेबोरेटरी की प्रगति के बारे में सुना। यूरोपियन संघ में समाजविज्ञान पर शोध के महत्व की तरफदारी करते हुए हमनें कार्यकारी समिति से हस्ताक्षरित एक सामुहिक पत्र लिखा।

अन्त में हमनें धन्यवाद ज्ञापन की एक टिप्पणी अपने मेजबानों विशेष तौर पर अमेरिकी विश्वविद्यालय, बेरुत के सारी हनाफी, ओबादा कासर, तथा छेबिब दियाब के लिए लिखि जिन्होनें इस सभा को सबसे अधिक आनंदपूर्ण तथा रुचिकर बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोडी, और साथ ही आई.एस.ए. के परिश्रमी स्टाफ को भी हमारी जटिल सभाओं को सुविधाजनक तरीके से सम्पन्न करवाने तथा आई.एस.ए. को भविष्य की प्रगति के पथ पर लंबे कदम रखते हुए देखने के लिए एक बार पुनः सम्मानित किया। ■

> शोध निबन्धों पर चर्चा के दौरान दक्षिण अफ्रीका की तलाश

टीना उईस, जोहान्सबर्ग विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका तथा आई.एस.ए. उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय संघ, 2010–2014

आई.एस.ए. पीएच.डी. प्रयोगशाला के विद्यार्थी स्वेटो की यात्रा पर।

आई.एस.ए. की दसवीं डाक्टोरल प्रयोगशाला अपने तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार जोहान्सबर्ग विश्वविद्यालय के तत्वावधान में वाल डेम जो कि दक्षिण अफ्रीका के वेरेनिगिंग के निकट स्थित है में नवम्बर 8 से 11, 2011 मे आयोजित की गई । 50 आवेदकों में से चीन, ईरान, यूरोप, अमेरिका, मैक्सिको तथा ब्राजील के 12 विविध पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के एक समूह का चयन किया गया। दक्षिण अफ्रीका के दो विद्यार्थियों ने भी शिरकत की। उनके गुरु भी विविधताओं वाले थे जिनके नाम इस प्रकार हैं: यान मैरी फ्रिट्ज अमेरिका से, चिन चुन यू ताइवान से, योशिमिचि साटो जापान से। इस वर्ष की डाक्टोरल प्रयोगशाला का मुख्य विषय था – सामाजिक बहिष्करण, नागरिकता तथा सामाजिक पूँजी।

कार्यक्रम की शुरुआत ''अफ्रीका में विद्यार्थियों का पुर्नःस्वागत'' करते हुए स्टर्कफोन्टियन की गुफाओं की यात्रा से हुई जो कि मानवता की मूल जन्मस्थली तथा विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा है तथा जहां वैज्ञानिकों नें बहुत से जानवरों के जीवाश्मों की खोज की है जो कि मानव के जन्म से भी 40 लाख वर्ष पुराने हैं। इन जीवाश्मों मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा सर्वाधिक प्रसिद्ध है ''मिसेज प्लेज'' (Mrs. Ples) जो कि 21 लाख वर्ष पुराना आस्ट्रालोपिथिकस की खोपडी है तथा ''लिटिल फुट'' जो कि आस्ट्रालोपिथिकस का लगभग 30 लाख वर्ष पुराना पूरा अस्थिपंजर है। इस यात्रा के पश्चात विद्यार्थियों और अध्यापको को द्वीप पर स्थान्तरित कर दिया गया, पहले बसों से तथा बाद में नावों के द्वारा।

प्रयोगशाला चार दिन तक चली जिसमें कि विभिन्न सत्रों मे विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने अपने कार्य प्रस्तुत किये। प्रयोगशाला ने विचारविमर्श को जीवन्तता प्रदान की तथा विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले श्रोताओं की उपस्थिति से तेजस्वी तथा स्वस्थ चर्चा प्रदान की। गर्म शामों की गतिविधियों मे शामिल थी एक यात्रा जो कि एक खेल थी तथा एक बोट क्रूज जो कि द्वीप के आसपास ही था जिसने उपस्थित भागीदारों को एक दूसरे को अच्छी प्रकार से जानने का अवसन प्रदान किया। परंपरागत दक्षिणी अफ्रीकी ब्राई (Braai) जो कि बार–बे–क्यू है तथा केम्प फायर से द्वीप पर कार्यक्रमों का समापन हुआ। शनीवार को विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को दक्षिणी अफ्रीका के अधिक नवीन इतिहास को जानने के लिए स्वेटो (Soweto) की यात्रा करवाई गई जहां कि उनको विशिष्ठ शबीन (shebeen) लन्च परोसा गया। शनीवार की शाम को द व्यू होटल जहां से जोहान्सबर्ग के 'मेलविले कोपीज नेचर रिजर्व' के नयनाभिराम दृष्य दिखाई देते हैं में विदाई रात्रि भोज के साथ प्रयोगशाला का समापन हुआ।

अन्त में, मैं प्रोफेसर रोरी रयान, डीन मानवीकी संकाय को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूंगी जिन्होंने प्रयोगशाला की स्थानीय मेजबानी के लिए बडी मात्रा में धन की व्यवस्था की। मैं आश्वस्त हूं कि इस डाक्टोरल प्रयोगशाला के सभी भागीदारों को उनके इस द्वीप तथा जोहान्सबर्ग प्रवास की स्नेहिल स्मृतियां लम्बे समय तक याद रहेंगी। ■

> समाजशास्त्रीय यात्राएँ

लालेह बहबेहनियन, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, यू. एस. ए.

लालेह बहबेहनियन ने 'जर्नीज् थ्रू सोशियोलोजी' कार्यक्रम की मेजबानी की थी। ग्लोबल डायलाग ने आई. एस. ए. की कार्यकारणी समिति के साथ लिए गये साक्षात्कारों से उन्होंने क्या सीखा, का आकलन करने का कहा।

जर्नीज् थ्रू सोशियोलोजी आई. एस. ए. की कार्यकारिणी समिति के साथ रिकार्ड किये गये साक्षात्कारों की एक श्रृंखला है। दुनिया भर में फैले समिति सदस्यों से स्काइप के माध्यम से संयोजित ये साक्षात्कार इन विद्वानों की समाजशास्त्र में निजी यात्रा के बारे में अद्भुत झलक दिखलाते हैं। साक्षात्कारों में दो मुख्य प्रश्नों पर फोकस किया गया : वे समाजशास्त्र की तरफ कैसे आकर्षित हुए और उन्होंने किन चुनौतियों का सामना किया। सभी साक्षात्कार आईएसए के वेबपेज http://www.isa-sociology.org/journeys-through sociology/ पर देखे जा सकते हैं।

ये साक्षात्कार एक तरफ तो चित्ताकर्षक व्यक्तिगत वृतांतों से परिपूर्ण हैं ओर दूसरी तरह वे समाशास्त्रियों द्वारा समय और स्थान के परे कई अनुभवों पर प्रकाश डालते हैं। आधारभूत रूप से, ये अधिकतर सामाजिक विश्व के प्रति गहन जिज्ञासा की भावना की ओर इंगित करते हैं। अतः योशिमिचि साटो चर्चा करते हैं कि वे कैसे ''सामाजिक पहेलियों'' को समझने के तरीके ढूँढते हुए समाजशास्त्र की तरफ आकर्षित हुए जबकि जेनिफर प्लाट विभिन्न आनुभाविक आँकड़ों के साथ काम करने के आवेश का वर्णन करती हैं। इनमें से अधिकांश विद्वानों की समाजशास्त्रीय उत्सुकता यात्रा और प्रवास के अनुभवों से प्रज्जवलित हुई है। माइकल बुरावे की समाजशास्त्रीय कल्पना उनके यू. एस., भारत और जाम्बिया की यात्राओं से पोषित थी, जबकि हबीबुल खोंडकर का बंग्लादेश से कनाड़ा, सिंगापुर और यू. ए. ई. में प्रवास के उनके अनुभवों ने उनके तुलनात्मक अध्ययन में संलग्न ''घुमक्कड़ समाजशास्त्री'' के दृष्टिकोण को विकसित किया। टॉम डायर न्यूजीलैण्ड के एक अप्रवासी आइरिश परिवार में बड़े होते हुए ''अलगाव'' के शुरूआती अनुभवों का वर्णन करते हैं। साथ ही युवावस्था में उनकी यात्राएँ और कैसे इस अलगाव ने उन्हें दुनिया के बारे में समाजशास्त्रीय दृष्टि से सोचने की तरफ झुका दिया। विनिता सिन्हा समान विषय की चर्चा करती हैं जब वे उनके समाजशास्त्र के प्रोफेसरों द्वारा रोपित ''असुविधा'' के भाव का वर्णन करती हैं और कैसे इस भाव ने उनके समक्ष दुनिया को समझने के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत कीं।

यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि इनमें से कई विद्वानों का प्रारंभिक दौर में विषय के प्रति झुकाव प्रेरणादायक शिक्षकों के कारण हुआ, ऐसी प्रेरणा जिसे वे भी अपने विद्यार्थियों के बीच हस्तान्तरित करना चाहते हैं। टीना उईस अपने शिक्षकों द्वारा छोड़ी गई छाप का स्मरण करती हैं और वे कैसे वर्तमान समय में दक्षिण अफ्रीका के विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतियों को समझने और उनसे लड़ने के लिए समाजशास्त्र का उपयोग करती हैं। दक्षिण अफ्रीका के ही साइमन मापाडिमेंग का विषय के साथ परिचय रंग भेद विरोधी आंदोलन से गहन रूप से जुड़े प्रोफेसरों के द्वारा हुआ जिसके फलस्वरूप उन्होंने अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी समाजशास्त्रियों की एक नई पीढ़ी का पोषण करने का संकल्प लिया।

साक्षात्कार के दौरान एक विषय बारम्बार उभरा : समाजशास्त्र को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखना। सभी चर्चाएँ समाजशास्त्र की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों से निपटने की संभावित शक्ति की तरफ जा रही थीं।

जेमे जिमेनेज ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थी के रूप में पहली बार कम्प्यूटर पर काम करने की घटना का स्मरण करते हुए कहा कि उस समय ऐसा लग रहा था मानों इसमें देश की समस्याओं का हल करने की ताकत है। इसी कारण उन्होने सामाजिक–आर्थिक समस्याओं को समझने के लिए संख्यात्मक शोध पर कार्य किया। डिलेक सिंडोग्लू तुर्की में 1970 के दशक के उत्तरार्ध में राजनीतिक अशांति के कारण समाजशास्त्र में पनपी रूचि का वर्णन करती हैं। ''मैं तुर्की में क्या हो रहा है जानना चाहती थी और अभी भी जानना चाहती हूँ।''

कई सारे साक्षात्कार, जीवनी और इतिहास के प्रतिच्छेदन के आकर्षक विवरण

>>

प्रदान करते हैं जिनके कारण विद्वान समाजशास्त्र के पथ पर चले। ईश्वर मोदी भारत के स्वतन्त्रता पश्चात के काल की बात करते हैं कि कैसे समाज वैज्ञानिकों का ध्यान पुनर्निर्माण और विकास की तरफ आकर्षित हुआ। चिन–चुन यी का समाजशास्त्र के प्रति रूझान 1970 के दशक के ताइवान में नाटकीय सामाजिक रूपांतरण के कारण जबकि एमा पोरियो की समाजशास्त्र में यात्रा फिलीपीन्स के मार्शल लॉ के दौरान व्यापक सामाजिक परिवर्तन को समझने की इच्छा से शुरू हुई। सेलेना ज्ड्रावोम्यास्लोवा अपने पिता और उनके सहयोगियों द्वारा सोवियत समाजशास्त्र के शुभारंभ करने और उनके प्रभाव का मनोरम विवरण प्रस्तुत करती हैं। 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध में विषय से मोहभंग होने के पश्चात् पेरेस्ट्रोइका द्वारा कई नये रास्ते खुलने के कारण समाजशास्त्र एक बार पुनः पनपने लगा।

दुनिया भर के समाजशास्त्रियों के समक्ष चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला की झलक भी इन साक्षात्कारों के माध्यम से मिलती है। इनमें से कुछ चुनौतियाँ लिंग, प्रजाति या नागरिकता के द्वारा उत्पन्न कठिनाइयाँ हैं जबकि अन्य सार्वभौमिक रूप से पायी जाती हैं। वैश्विक दक्षिण के कई विद्व ान समाजशास्त्रीय सिद्धान्त को उसके पारम्परिक यूरो–केन्द्रित सीमाओं से परे ले जाने के संघर्ष और समाजशास्त्रीय ज्ञान (भाषा, शोध–पत्रिका एवं प्रकाशन, शोध प्राथमिकताएँ इत्यादि) के निर्माण में निरन्तर बनी हुई वैश्विक असमानताओं को संबोधित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। इनमें से कई विद्वान ऐसा अनुसंधान जो स्थानीय स्तर निहित और वैश्विक रूप से प्रासंगिक हो, की चुनौती से लड़ रहे हैं। सारी हनाफी ने प्रकाशन सम्बन्धी इस तनाव का बहुत खूबसूरती से वर्णन किया है। उनके अनुसार यह ''वैश्विक स्तर पर प्रकाशन और स्थानीय स्तर पर तबाह'' और ''स्थानीय स्तर पर प्रकाशन और वैश्विक स्तर पर तबाह'' के बीच चुनाव है, के रूप में प्रस्तुत होता है।

साक्षात्कार के दौरान कई और सार्वभौमिक रूप की चुनौतियाँ उभरीं, विशेष

“जीवनी और इतिहास के प्रतिच्छेदन के चित्ताकर्षक वृतांत”

रूप से विषयगत सीमाओं की बाध्यता से सम्बन्धित। राकेल सोसा लेटिन अमेरिका में अर्न्तविषयी शोध एवं सहयोग को विकसित करने के अपने प्रयासों और सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए विभिन्न प्रकार की व्याख्याओं के महत्व का वर्णन करती हैं। राबर्ट वान क्राइकेन का तर्क है कि अर्न्तविषयी चिन्तन को प्रोत्साहन देने में समाजशास्त्र एक अग्रणी भूमिका निभा सकता है। वे यह भी बताते हैं कि कैसे वे अन्य प्रकार के ज्ञान से लेने की सुविधा के कारण इस क्षेत्र की तरफ आकर्षित हुए। कई साक्षात्कार समाजशास्त्रियों की विभिन्न भूमिकाओं (शिक्षण, अनुसंधान, प्रशासन, सक्रियतावाद इत्यादि) में सन्तुलन की चुनौती और समाजशास्त्रीय अनुसंधान के विभिन्न क्षणों में वार्ता (पेशेवर क्रिटिकल, नीतिगत और सार्वजनिक) पर केन्द्रित थे। मारग्रेट अब्राहम अपने शोध, शिक्षण और यू. एस. की दक्षिण एशियाई समुदायों में घरेलू हिंसा के प्रति सक्रियतावाद के बारे में चर्चा कर इस सन्तुलन की प्रक्रिया को दर्शाती हैं।

ये साक्षात्कार दुनिया के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न पीढ़ीयों की समाजशास्त्र के प्रति विविध प्रकार के आकर्षण का प्रदर्शन करते हैं। ये दर्शाते हैं कि आई. एस. ए. का नेतृत्व कितना रोचक और मनोरंजक है। यदि आप को मुझ पर शंका है तो आप प्रत्येक साक्षात्कार के अन्त में जाइये, जहाँ साक्षात्कार दाता हमें बताते हैं कि यदि वे समाजशास्त्री नहीं होते तो क्या करते–वकील, डाक्टर, पत्रकार, वास्तुशिल्पी, बेली नृत्यांगनाएँ, बेलेरीनाज, बार मालिक, खाती या फिर पाक शो 'स्टरिंग इट अप' के मेजबान। हम भाग्यशाली हैं कि एक ऐसा विविध और मानवीय समूह हमारे संगठन की सेवा कर रहा है। ■

> अरब विद्रोह : समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य और भौगोलिक तुलनाएँ

अमीना अराबी और जूलियन युरगेनमेयर, फ्रेडरिक–एबर्ट–स्टिफंग, लेबनान

काहिरा की मोहम्मद महमूद पथ पर क्रान्तिकारी कला। फोटोः मोना अबाजा।

अरब दुनिया में लोकप्रिय विद्रोह का भाग्य अनिश्चित है। तथापि, यह भी पहले से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र का राजनीतिक परिदृश्य उपनिवेशवाद के औपचारिक समाप्ति के समय से अब तक काफी हद तक बदल गया है और अविनाश्य ''अरब अपवाद'' का आवश्यक विचार अब अन्ततः अविश्वसनीय हो गया है। 20 और 21 मार्च (2012) को बेरूत के अमरीकी विश्वविद्यालय में आयोजित एक सम्मेलन में न केवल समूची अरब दुनिया बल्कि भारत, लेटिन एवं उत्तरी अमरीका, यूरोप व अफ्रीका के शिक्षाविद विद्रोह और आंदोलनों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने हेतु एकत्रित हुए। इस सम्मेलन का उद्देश्य विशेष रूप से उपेक्षित समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों को सामने लाना और ऐतिहासिक, पार देशीय और महा–द्वीपीय तुलनाओं से विद्रोहों के भविष्य की प्रक्षेपवक्र संभावनाओं से सम्बन्धित परिदृश्य को विकसित करना था।

वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो आंदोलन पर अपनी प्रस्तुति में मार्कस शुल्ज (इलिनाय विश्वविद्यालय, अर्बाना–चेम्पेन) ने इस तरह के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य हेतु सामाजिक आंदोलनों पर शोध करने का एक सैद्धान्तिक ढाँचा प्रस्तुत किया। अरब विद्रोह और कब्जा करो आंदोलन में कई आश्चर्यजनक समानांतर समानताएँ स्पष्ट हो गईं जैसे उनकी संभाषण सम्बन्धी नेतृत्वहीन प्रकृति। अरब के मामले के लिए मोहम्मद बामेह (पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय) ने लंबे समय से चली आ रही अराजकतावादी नैतिकता की परम्परा का पता लगाया। उनके लिए अरब दुनिया के लोकप्रिय आंदोलनों को अधिनायकवाद के प्रति शंकित ऐतिहासिक स्मृति की अभिव्यति के रूप में माना जा

सकता है। यह स्मृति लोगों को केवल प्रतिनिधित्व के रूप में नहीं अपितु वास्तविक शासकों के रूप में लोगों की स्थापना के लिए प्रयासरत है।

विद्रोह के अन्तर्गत लोकतंत्र की असली लालसा को बारम्बार बहस का विषय बनाया गया। हालाँकि प्रतिभागियों ने आर्थिक शिकायतों के प्रख्यात पूर्व–महत्व पर सहमति जताई परन्तु उन्होंने विशुद्ध भौतिकवादी व्याख्या को न्यूनकारी और अरब समाजों में हो रहे गहन परिवर्तनों को समझने के लिए खारिज कर दिया। अब्दुलहादी खलफ (लुंड विश्वविद्यालय) द्वारा विश्लेषित बहरीन के मामले में सच्चे राजनीतिक विद्रोह के उदाहरण के रूप में राजा की ''ब्रेड एवं सर्कस'' नीति के खिलाफ और ''प्रजा नहीं नागरिक'' बनाने की नीति के लिये आवाज उठाई। सारी हनाफी (बेरूत के अमरीकी विश्वविद्यालय) ने तर्क दिया कि विद्रोह के बाद राजनीतिक व्यक्तिपरकता का नया रूप उत्पन्न हुआ है जो तथाकथित नवउदारवादी व्यक्तिवादिता के बिल्कुल विपरीत में सामूहिक संस्थाओं से सम्पूर्ण मुक्ति का प्रचार नहीं करता और अपने कर्ताओं से अपने सामाजिक सम्बन्धों पर सक्रिय रूप से विचारने का आह्वान करता है। यदि आवश्यकता पड़े तो वह न केवल इन सम्बन्धों को बदलने बल्कि स्वयं सामूहिक संस्थाओं के बदलने पर भी जोर देता है। हनाफी के लिए इस प्रकार के 'रिफ्लेक्सिव व्यक्तिवाद' में साम्प्रदायिक एवं नृजातीय खाइयों को पाटने की क्षमता होती है ताकि 'नई देशभक्ति' का मार्ग प्रशस्त हो सके। बाद की चर्चाओं में यह स्पष्ट हो गया कि वास्तव में क्या ऐसा होगा अभी भी अधरझूल में है – यह देखते हुए कि रिफ्लेक्सिविटी के तथाकथित गढ़ ट्यूनिशिया और मिस्र में भी आंदोलनों के पश्चात मतदान व्यवहार अभी भी काफी हद तक सांप्रदायिक और नृजातीय वफादारी द्वारा निर्धारित हुआ।

राकेल सोसा एलिजागा (नेशनल ऑटोनोमस यूनिवर्सिटी ऑफ मेक्सिको) और एडगार्डो लेण्डर (वेनेज्युएलन केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कराकास) ने लेटिन अमरीका के अनुभवों के आधार पर मात्र सत्ता परिवर्तन के बजाय सामाजिक क्रांति की आवश्यकता पर बल दिया। इसी तरह से ही लेटिन अमरीकी देशों में लोकतंत्र (उदारवादी) के संक्रमण बातचीत के बावजूद बनी हुई शोषण और उत्पीड़न की संरचनाओं को दूर करना संभव होगा। टीना उईस (जोहान्सबर्ग विश्वविद्यालय) ने भी दक्षिण अफ्रीका में 'वार्ता आंदोलन' को अर्न्तनिहित रूप से रूढ़िवादी चित्रित करते हुए समान आलोचना की।

जैसा कि लेटिन अमरीका में देखा गया, सैन्य शक्ति को शासन बदलाव में एक मुख्य कर्त्ता के रूप में देखा जाना आवश्यक है। येजिद सेयिग (कार्नेगी मिडिल–इस्ट सेन्टर, बेरूत) ने अरब दुनिया में सत्तावादी शक्ति के निर्माण में सैनिक शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका के फलस्वरूप करीबन सभी सामाजिक क्षेत्रों में सैन्य शक्ति की घुसपैठ की तरफ इशारा किया। नागरिक–सैन्य सम्बन्धों का पुनः विन्यास अतः आंदोलन पश्चात सरकारों के लिए सबसे जरूरी और सबसे अधिक जोखिम भरी चुनौती है। सेयिग के अनुसार लंबे समय से स्थापित सामाजिक हितों के लिए आवश्यक अशांति समाज में सैन्य शक्ति के लिए एक गंभीर बाधा बन सकती है। आंदोलनकारियों और सेना के बीच चलने वाले झगड़ों में पब्लिक स्पेस की भूमिका का उल्लेख करते हुए मोना अबाजा (अमरीकी विश्वविद्यालय, काहिरा) ने अपनी प्रस्तुति ''रिफ्लेक्शनस आन द पोस्ट–रिवोल्यूशन'' में बताया कि मिस्र का सैन्य बल अभी लोकतांत्रिक नियन्त्रण के अधीन होने से बहुत दूर है और अपने लिए शक्ति हड़पने का उद्देश्य रखता है।

तुर्की के नागरिक–सैन्य सम्बन्धों को अक्सर अरब दुनिया के लिए संभावित मॉडल के रूप में देखा गया है। डिलेक सिंडोग्लू (बिलकेण्ट विश्वविद्यालय, अंकारा) ने इस मत पर सवाल करते हुए तुर्की के लोकतंत्र की कमियों की तरफ इंगित किया और ''जेण्डर–ब्लाइंड डेमोक्रेटाइजेशन'' के खिलाफ विशेष रूप से आगाह किया। फातिमा कुबेसी (कतार विश्वविद्यालय) और यान मैरी फ्रिट्ज (सिनसिनाटी विश्वविद्यालय) ने परिवर्तन प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका की सविस्तार व्याख्या की। फ्रिट्ज ने राजनीतिक परिवर्तन के क्षणों में निहित मौलिक आकस्मिकता जो महिलाओं के सशक्तिकरण एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए एक अवसर प्रदान करती है, की तरफ इशारा किया।

लोकतांत्रिक परिवर्तन लाने के लिए किसे सशक्त बनाना है के प्रश्न के संदर्भ में जस्टिन गेंग्लर (कतार विश्वविद्यालय) ने नागरिक सक्रियता से लोकतांत्रिक मूल्यों की अधिक सराहना के पारंपरिक ज्ञान को चुनौती दी। वर्ल्ड वेल्यू सर्वे के तथ्यों के आधार पर गेंग्लर ने इस विवादास्पद प्राकल्पना को आगे किया है कि कम से कम कतार में तो नागरिक समाज लोकतांत्रीकरण का एक माध्यम नहीं है अपितु यह क्लाइंटलिस्ट (अनुयायी) संरचना की पहुँच को सुलभ बनाता है। गोरान थबोर्न (केम्ब्रिज विश्वविद्यालय) ने गेंग्लर के तर्क को और आगे बढ़ाया और दावा किया कि लोकतांत्रिक देशों में भी नागरिक समाज सर्वप्रथम एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सही मायने में लोकतांत्रिक मूल्यों के बजाय विशिष्ट हितों का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है।

अपने समापन भाषण में माइकल बुरावे (केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले) ने आयोजक हनाफी की विद्रोहों पर व्यवस्थित तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए सराहना की। विद्रोहों का वास्तविक तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की दिशा में यह सम्मेलन एक महत्वपूर्ण कदम था, इसके बावजूद कि वह विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों के लोकतांत्रीकरण के अनुभवों का संश्लेषण प्रदान करने में सफल नहीं रहा। सम्मेलन में कुछ ही प्रतिभागी इस बात से चिंतित थे कि अन्य जगहों के अनुभवों से अरब विद्रोहों के लिए क्या निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अधिकतर प्रस्तुतियाँ और विमर्श देश और क्षेत्र की विशिष्टता पर केन्द्रित थे। इस तरह आंदोलनों और लोकतांत्रीकरण पर हमारे आनुभाविक ज्ञान को व्यवस्थित करने की बजाय विस्तृत परन्तु पृथक वैयक्तिक अध्ययनों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इस प्रकार, शासन परिवर्तन के तुलनात्मक विश्लेषण के लिए ऐसा ढाँचा, जो कि सरल कारकीय दावों के जाल में न फँसें, को विकसित करना अभी बाकी है। हमें यह याद रखना चाहिए कि अरब विद्रोहों की विशिष्ट सहजता को (अर्द्ध) निर्धारणात्मक मॉडल से निरूपित नहीं किया जा सकता है। गोरान के अनुसार ''मानवीय एजेन्सी की अनिश्चितता'' को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। अतः नहला चहल (अल–सफीर समाचार पत्र) ने हमें अपनी ध्यानाकर्षित वार्त्ता में स्मरण कराया कि जो लोग राजनीतिक बदलाव के लिए बहस करते हैं उन्हें इस ऐतिहासिक क्षण का लाभ उठाना चाहिए और अपने सैद्धान्तिक अनुचिंतन को क्रांतिकारी व्यवहार में परिवर्तित कर देना चाहिए। ■

> एक अथवा अनेक समाजशास्त्र : एक पॉलिश बहस

मिकोलज मिरजेजेवस्की, केरोलिना मिकोलाजेवेस्का एवं जेकब रोजेनबाम, पब्लिक लैबोरेट्री, वारसा विश्वविद्यालय, पौलेण्ड[1]

समाजशास्त्र के भविष्य पर वारसा में एक वैश्विक संवाद संगोष्ठी ।

एक असमान विश्व में समाजशास्त्र की स्थिति पर जीवन्त बहस के साथ ग्लोबल डायलाग 2.2 वह पहला अंक था जो पॉलिश भाषा में प्रकाशित हुआ। सम्पादकों के स्थानीय समूह ने विद्यार्थियों द्वारा संचालित सार्वजनिक समाजशास्त्र प्रयोगशाला (पब्लिक सोशियोलोजी लैब) के साथ कार्य किया एवं निर्णय लिया कि वैश्विक बहस को स्थानीय संदर्भों के साथ अधिक से अधिक जोड़ कर प्रस्तुत किया जाय। हमने पिओटर स्टोम्पका एवं उनके विरोधियों द्वारा प्रस्तुत किये गये मुद्दों को ध्यान में रखकर एक सेमीनार का आयोजन किया और इन मुद्दों को पॉलिश परिप्रेक्ष्य में समझने व व्यक्त करने की कोशिश की।

यह आयोजन 19 जनवरी 2012 को हुआ और इसमें विद्यार्थियों, शोध विद्यार्थियों एवं विश्वविद्यालय के प्रोफेसर्स के साथ अन्य सम्बद्ध संस्थानों के लोगों ने सहभागिता की। सेमीनार में प्रत्येक उपस्थित विद्वान को अपना मत प्रस्तुत करने की स्वतन्त्रता थी पर मुद्दों को व्यवस्थित दिशा देने के उद्देश्य से तीन प्रमुख वक्ताओं को प्रारम्भिक वक्तव्य हेतु आमन्त्रित किया गया। प्रोफेसर अन्ना गिजा–पाल्शजुक जो कि परिवार एवं सामाजिक सम्बन्ध का समाजशास्त्र की विशेषज्ञ है एवं पौलेण्ड के गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) क्षेत्र में सक्रिय है, प्रोफेसर एण्टनी स्यूलेक पॉलिश समाजशास्त्र परिषद (पॉलिश सोशियोलोजिकल एसोसिएशन) (पीटीएस) के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं। पद्धतिशास्त्र, जनमत के सिद्धान्त एवं पॉलिश समाजशास्त्र का इतिहास के क्षेत्रों के वे विशेषज्ञ हैं। डाक्टर इजाबेला वैग्नर के अध्ययन के मुख्य क्षेत्र वैज्ञानिकों एवं संगीतज्ञों के पेशे से सम्बद्ध कार्य क्षेत्र हैं। उन्होंने फ्रांस, पोलैण्ड एवं अमेरिका में अनुसंधान किये हैं और पेरिस में ईएचइएसएस तथा हावर्ड विश्वविद्यालय के साथ जुड़ कर उन्होंने कार्य किया है।

सेमीनार में प्रस्तुत किये विचारों का सम्बन्ध अनेक विषयों, जिसमें समाज शास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में उभरे संघर्ष, पोलैण्ड में विज्ञान तथा उच्च शिक्षा में 2011 में प्रारम्भ हुए सुधार सम्मिलित थे, पर बहस हुई। पर मुख्यतः इस मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित किया गया कि क्या एक सार्वभौमिक समाजशास्त्र सम्भव है (या वांछनीय है) या हमें स्थानीय समस्याओं/मुद्दों को जानने

>>

व समझने हेतु 'स्थानीय समाजशास्त्रों' को महत्व देना चाहिए। दूसरे शब्दों में हमने सेमीनार के मुख्य विषय को मुख्य बहस के केन्द्र में रखा जिसे 'एक या अनेक समाजशास्त्र' का शीर्षक दिया गया था।

डॉ. इजाबेला वैग्नर ने समाजशास्त्रियों के मध्य असमानताओं एवं बहुस्तरीय पक्षों से सम्बद्ध विभाजनों का उल्लेख करते हुए अपने वक्तव्य को प्रारम्भ किया। संघर्ष केवल उत्तर एवं दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम, अभिजन व गैर अभिजन समाजशास्त्रियों के मध्य ही नहीं है अपितु सिद्धान्तकारों एवं 'नृवंशीय विशेषज्ञों' (एथनोग्राफर्स) के मध्य भी है, जो क्षेत्रीय अध्ययनों से अपनी अध्ययन विद्या की शुरूआत करते हैं और तत्पश्चात् सिद्धान्तों की तरफ अग्रसर हो जाते हैं। डॉ. वैग्नर के अनुसार पिओटर स्टोम्पका एवं माइकल बुरावे की जो सामाजिक पृष्ठभूमि हैं तथा अकादमिक कैरियर हैं के पक्ष इन दोनों दृष्टिकोणों का व्यापक रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं। डॉ. वैग्नर ने समाजशास्त्र की स्थिति की तुलना 'मालिक्यूलर बायोलजी' (आणविक जीव विज्ञान) से की। मालिक्यूलर बायोलजी में जो वैज्ञानिक प्रभावी रूप से सक्रिय हैं वे कृत्रिम प्रयोगशाला स्थितियों में कार्य करते हैं तथा वस्तुओं को मुख्यतः उत्पादित करने की कोशिश में 'इन विर्टो' पद्धति का प्रयोग करते हैं। परिणामस्वरूप 'इन विवो' पद्धति को पुनः स्थापित किया गया। हालांकि यह पद्धति अत्यन्त खर्चीली है और इसमें होने वाले प्रयोग लगभग 95 प्रतिशत तक असफलता के साथ समाप्त होते हैं पर इस सबके बावजूद इससे ज्ञान का सृजन होता है एवं आनुभाविक यथार्थ को सैद्धान्तिक आयाम दिये जा सकते हैं। 'इन–विट्रो' पद्धति समाजशास्त्र में सैद्धांतिक उपागम के अत्यन्त निकट है। जबकि इन विट्रो पद्धति नृवंशीय पद्धति के निकट है। इसमें पूर्व में ही कुछ पूर्वकल्पनाओं को निर्मित कर लिया जाता है और फिर क्षेत्रीय कार्य से सिद्धान्तों को निर्मित किया जाता है। डॉ. वैग्नर ने यह आशा व्यक्त की कि समाजशास्त्र भविष्य में जीव–विज्ञान के समानान्तर हो जायेगा।

प्रोफेसर एन्टनी सुलेक ने हमारे प्रश्नों के पक्षों को उठाते हुए समाजशास्त्र को एक ऐसे विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जो ''समाज के विषय में बात करता है।'' यह ''समाज का विज्ञान नहीं है। उनका दावा है कि समाजशास्त्रीय क्रियाकलापों में हम भाषाओं की विविधता पर बहस कर सकते हैं और इस के साथ ही समाजों की विविधता पर चर्चा कर सकते हैं। वाद का पक्ष संभवतया उन सैद्धान्तिक समस्याओं को सम्मिलित करता है जिनका समाधान नहीं है (विभिन्न समाज किस स्तर तक एक दूसरे से अलग होते हैं) इसके विपरीत समाजशास्त्र की जिस भाषा को हम प्रयुक्त करते हैं और उसे स्वीकारते हैं वहाँ हमें सार्वभौमिक–विशिष्ट के विपरीत की स्थिति एक भ्रामक द्वन्द्व नजर आती है। प्रोफेसर सुलेक का सुझाव है कि समाजशास्त्र विषय में दो समानान्तर ''समाजशास्त्रीय सर्किट्स'' पाये जाते हैं। पहला सर्किट पूर्ण रूपेण सैद्धान्तिक है, जिसमें समाजशास्त्री एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं। यहाँ अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन न केवल स्वीकार्य है अपितु वांछनीय भी है। यहाँ पर ''समाजशास्त्री विश्व के विषय में अथवा विश्व के लिए बात करते हैं। विश्व के लिए यह बात विश्व भाषाओं में होनी चाहिये।'' हमारा उद्देश्य यह है कि दैनिक अनुभवों को समाजशास्त्रीय सिद्धान्त की भाषा में संदर्भित पक्षों के बिना प्रस्तुत करना चाहिए। एक दूसरा सर्किट वह है जहाँ समाजशास्त्री अपने स्वयं के समाज से बात करते हैं। इस सर्किट में समाजशास्त्र की सर्वाधिक प्रमुख भूमिका है। प्रोफेसर सुलेक के अनुसार इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समाजशास्त्रीय लेखन विभिन्न विद्वानों के लिए नहीं है अपितु इसके पाठकों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। परन्तु यहाँ इस का अभिप्राय यह नहीं है कि हम इसे मीडिया समाजशास्त्रियों की भूमिका के रूप में मान लें। ऐसा मानना भ्रम होगा। वे लोग जो मीडिया समाजशास्त्री के रूप में टी. वी. पर उपस्थित होते हैं विद्वान होने की अपेक्षा मुख्य व्यक्तित्व (celebrities) से ज्यादा मिलते हैं।

प्रोफेसर अन्ना गिजा–पाल्शजुक ने समाजशास्त्र के भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया। उनका मत था कि एक सार्वभौमिक समाजशास्त्र की खोज करते समय हमें तीन महत्वपूर्ण सवालों पर ध्यान देना चाहिए। पहला सार्वभौमिक ज्ञान को प्रस्तुत करते समय उन सभी विचारकों को जो इस प्रस्तुति में सहभागिता कर रहे हैं को समान अवसर प्राप्त हुए या नहीं। क्या हम उस प्रणाली के विषय में सोचें जो हमें उन लोगों से संरक्षण प्रदान करें जो इस विज्ञान पर अपना एकाधिकार किये हुए हैं। दूसरा, समाजशास्त्रीय एजेन्डा कौन सुनिश्चित करता है। यह किसके द्वारा निर्धारित किया जाता है कि 'ज्ञान के विस्तृत दायरे' के अन्तर्गत कौन कौन सी समस्याएँ महत्वपूर्ण हैं। तीसरा, हम लगातार और हमेशा एक ही विषय के बारे में चर्चा क्यों करते हैं? विभिन्न समाजों के मध्य पाये जाने वाले अंतर सार्वभौमिक तर्क की प्रस्तुति के स्तर पर ही केवल सक्रिय नहीं होते। विश्व को हम किस दृष्टि से देखते हैं, के निर्धारण में सिद्धान्तों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में कुछ सिद्धान्त अपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए किसी ऐसे देश में जहाँ बाजार स्वतन्त्र नहीं है, नव्य–क्लासिकल अर्थशास्त्र प्रयुक्त नहीं हो सकता।

प्रोफेसर अन्ना गिजा–पाल्शजुक ने पोलेण्ड में हाल ही में हुए उच्च शिक्षा में सुधारों को जन–समाजशास्त्र (पब्लिक सोशियोलोजी) के संदर्भ के अन्तर्गत प्रस्तुत किया और उससे संबंधित बहस पर अपने विचार रखें।[2] इस विषय पर हुई चर्चा में जन–समाजशास्त्र प्रयोगशाला की प्रवर्तक डॉ. मेसि ग्डूला का तर्क था कि इन सुधारों ने पौलेण्ड के अकादमिक जीवन की स्थितियों में व्यापक परिवर्तन किए हैं। इन सुधारों के कारण पौलेण्ड के विद्वानों को अमेरिकन विद्वानों के रूप में परिवर्तित करने की कोशिश की जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान सूचकांक (इन्टरनेशनल साइन्स इंडेक्स) के द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिकाओं में जो शोध प्रपत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं, को अमरीकी विद्वान अपने विचारों के आधार पर अधिक मारक अंक प्रदान करते हैं जबकि दूसरी ओर विभिन्न समाजों की समस्याओं में सक्रिय विद्वान उन की सह–अकादमिक गतिविधियाँ एवं उनके विषय में विद्यार्थियों को शिक्षण के प्रयासों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। जन समाजशास्त्र अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन व्यवस्था की मान्यता को महत्व प्रदान नहीं करता अपितु इसका उद्देश्य स्थानीय स्थितियों में सक्रिय विभिन्न सामाजिक कर्ताओं के मध्य सम्बन्धों को निर्मित करना है।

पौलेण्ड की आदमिक संस्थाओं की स्थिति का अध्ययन करने के लिए हमें उस विश्लेष–णात्मक प्रणाली को महत्व देना होगा जिसमें अकादमिक निर्भरता एवं समाजशास्त्र पर आलोचनात्मक प्रतिक्रियाओं के पक्ष सम्मिलित हैं। हालाँकि यह सेमीनार उस एक प्रश्न का, जो मुखर था, के विषय में कोई निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं कर सकी। अर्थात् मुख्य विषय पर निष्कर्ष निर्मित नहीं किये जा सके। इस संदर्भ में ग्लोबल डायलाग (2.3) के पिछले अंक में जैफरी. सी. एलेक्जेण्डर के उस विचार को ध्यान में रखने की जरूरती है कि सार्वभौमिकता एवं विशिष्टता के मध्य के विवाद को हमेशा के लिए निपटाया नहीं जा सकता। लेकिन समय–समय पर विभिन्न संदर्भों के साथ इस पर पुनर्विचार करना जरूरी है। हम कुछ सामान्य निष्कर्षों पर पहुँचने की कोशिश कर सकते हैं। प्रोफेसर सुलेक ने इन शब्दों के साथ सेमीनार में अपने विचारों को समाप्त किया। उनका सुझाव था कि एक अच्छा समाजशास्त्र करने का प्रयास सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य है। विद्वानों के उत्कृष्टता को मापने का क्या पैमाना हो, इसके लिए हम सब स्वतन्त्र हैं, पर महत्वपूर्ण यह है कि उन पैमानों के साथ क्या हम क्रियान्वयन का भी हिस्सा हैं।

यह निष्कर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्र एक दृष्टिकोण के साथ अपने आप को ''अच्छा विज्ञान'' के रूप में परिभाषित नहीं कर सकता। हम जन–समाजशास्त्र का रास्ता हालाँकि चुनते हैं साथ ही हम स्थानीय समस्याओं पर विचार करते हुए स्थानीय समाजशास्त्र को विकसित करते हैं पर यह भी जरूरी है कि हम उन आयामों को विकसित एवं लागू करें जिनसे हमारे कार्यों को विज्ञान के रूप में मूल्यांकित किया जा सके। ■

[1] Koło Naukowe Socjologii Publicznej (Public Sociology Laboratory) is a students' scholarly organization founded in the Institute of Sociology, University of Warsaw. For contact please write to public.sociology.kn@uw.edu.pl or visit http://www.facebook.com/socjologiapubliczna.

[2] For more on the Polish reform, see articles by Izabela Wagner and Anna Szołucha in ISA blog (http://www.isa-sociology.org/universities-in-crisis/).

> बच्चों का झुण्ड– वो जो हम हैं!

रेहाने जवादी, तेहरान विश्वविद्यायल, ईरान

जापानी दल का परिचय (वैश्विक संवाद 2.3) के अनुवाद करने के दौरान जब मैं उनकी उपाधियों तथा शोध क्षेत्रों के बारे मे पढ रहा था – वह सब जो मैं सोच रहा था ''भगवान के लिए! हम लोग इन प्रोफेसरों तथा पीएच.डीज. के मध्य क्या कर रहे है? हम बिल्कुल बच्चों के झुण्ड जैसे हैं।

वास्तव में हम वही हैं। युवा समाजशास्त्रियों का एक उत्तेजित समूह जो यह सोचता है कि हम अध्ययन की बेहतर परिस्थितियों के योग्य हैं। अतः हमने अपने आपको तेहरान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की समाजशास्त्रीय परिषद के रुप में संगठित किया। हम औपचारिक शिक्षा की खामियों को चुनौती देने के लिए प्रयासरत हैं तथा दृढ़ निश्चयी हैं कि विकल्प बनाऐ जाऐं। हमारा मंडल विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के विद्यार्थियों द्वारा चुना गया है तथा इसका कार्यकाल एक शैक्षणिक सत्र का है।

कुछ वर्षों की निष्क्रियता के पश्चात हमारी परिषद ने गत वर्ष अपनी वचनबद्धता को पुनः आरम्भ किया। पिछले वर्ष हमारे चुने हुए मंडल मे शामिल थे : सगहर बोजोरगी, नज्मे तहेरी, इलाही नूरी, मित्रा दानेश्वर, फाजेह खाजेज़ाद, सोमायेह रोस्तमपोर, तथा रेहाने जवादी। वर्तमान दल ने अपना कार्य एक माह पूर्व शुरु किया। स्नातक उपाधी प्राप्त कर चुके सदस्यों का स्थान लेनें वाले नए चेहरे जो मंडल पर आये उनमें शामिल हैं : नस्तारन महमुदजादेह, तारा असगरी लालेह, तथा जहरा बाबेई। एम.ए. के दो विद्यार्थियों के अलावा मंडल में सभी सदस्य स्नातक के विद्यार्थी हैं तथा हम सभी महिलाएं हैं।

हमारी परिषद ने सर्वप्रथम अपना ध्यान अध्ययन दल बनाने पर दिया जो कि शास्त्रीय तथा आधुनिक समाजशास्त्रियों के कार्यों का अध्ययन कर सके, कार्यशालाओं का आयोजन करे जैसे कि ईरान में धर्म का समाजशास्त्र, एक सामाजिक छायांकन प्रदर्शनी का आयोजन किया, तथा माईकल बुरावे (लोक समाजशास्त्र) तथा जैनीफर प्लाट (समाजशास्त्र का इतिहास) सहित अन्य वक्ताओं की अन्तःदृष्टि का आनन्द लिया। अन्त में, लेकिन अन्तिम नहीं, हम सारेह (''शुद्ध'') के नाम से एक विद्यार्थियों की समाजशास्त्रीय पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहे हैं जिसका प्रत्येक अंक दो भागों मे है। पहला भाग हमारे संकाय में समाजशास्त्र के अध्ययन की परिस्थितियों की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है जबकि दूसरा भाग किसी एक समाजशास्त्री के लेख अथवा पुस्तकांश का अनुवाद होता है।

वैश्विक संवाद का अनुवाद करना भी हमारी परिषद का एक कार्य है। अन्य दलों से भिन्न हम अपने अनुवादकों के चयन मे एक सामुहिक रास्ता अपनातीं हैं। वास्तव में यह कार्यवाही हमारे उत्साह को और अधिक प्रोत्साहित करने का जरिया है। अतः प्रत्येक अंक के लिए हम अपने संकाय में घोषणा करती हैं, तथा सभी इच्छुक विद्यार्थियों को एक पृष्ठीय नमूने का अनुवाद करने के लिए कहती हैं। प्रत्येक अंक के लिए हम सर्वोत्तम नमूनों में से चार अनुवादकों का चयन करते हैं। यहां अनुवादक दल का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

रेहाने जवादी : तेहरान विश्वविद्यालय में एम.ए. की विद्यार्थी है। उसने अपनी बी. ए. तेहरान विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में की हुई है। उसके अध्ययन का क्षेत्र ऐतिहासिक समाजशास्त्र है तथा ईरान मे 19वीं तथा आरम्भिक 20वी शताब्दि के सुधारों पर विषेश ध्यान दिया है।

शहराद शाहवन्द : तेहरान विश्वविद्यालय से अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों में एम.ए. किया है तथा उसनें परसियन गल्फ विश्वविद्यालय से रसायन अभियान्त्रिकी में बी.ए. कर रखा है। वह अब अपना ध्यान धर्म, संस्कृति, तथा दक्षिणी एशिया की राजनीति विशेषतया पाकिस्तान पर केन्द्रित कर रहा है।

जलाल कारीमियान : शाहिद बेहेश्ती विश्वविद्यालय में एम.ए. दर्शनशास्त्र का विद्यार्थी है। उसने अपनी बी.ए. की उपाधि तेहरान विश्वविद्यालय से समाज विज्ञान में ली है। अब वह अस्तित्ववादी दर्शनशास्त्र तथा धर्म में घटना–क्रिया–विज्ञान का अध्ययन कर रहा है। वह लोक समाजशास्त्र में भी रुचि रखता है।

सगहर बोजोरगी : तेहरान विश्वविद्यालय में बी.ए. की विद्यार्थी है। उसकी शोध अभिरुचि आधुनिक ईरान के ऐतिहासिक समाजशास्त्र में है।

नज्मे तहेरी : तेहरान विश्वविद्यालय में बी. ए. की विद्यार्थी है।

तारा असगरी लालेह : तेहरान विश्वविद्यालय में बी.ए. की विद्यार्थी है।

फातमेह मोघाद्दासी : अलामेह टबाटाबाई विश्वविद्यालय में एम.ए. दर्शनशास्त्र की विद्यार्थी है। उसने अपनी बी.ए. तेहरान विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में की हुई है। उसकी प्रमुख शोध अभिरुचि शिक्षा के समाजशास्त्र तथा लोक समाजशास्त्र में है तथा वह अपना घ्यान ईरान में लोक समाजशास्त्र के इतिहास तथा शिक्षण व्यवस्था के द्वारा लोक समाजशास्त्र का विस्तार विषय पर कर रही है।

जैनब निसार : तेहरान विश्वविद्यालय में एम.ए. समाजशास्त्र की विद्यार्थी है। उसने अपनी बी.ए. तेहरान विश्वविद्यालय से की हुई है। वह अब महिलाओं पर अध्ययन कर रही है।

फाजेह स्माइली : तेहरान विश्वविद्यालय में एम.ए. समाजशास्त्र की विद्यार्थी है। उसने अपनी बी.ए. शाहिद बेहेश्ती विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में की है। वह पहलवी काल के दौरान की सामाजिक नीतियों का विश्लेषण कर रही है।

मित्रा दानेश्वर : तेहरान विश्वविद्यालय में बी.ए. समाजशास्त्र की विद्यार्थी है। वह युवा विचलन का विश्लेषण कर रही है तथा उसका ध्यान ईरान में मृत्यु दण्ड पर केन्द्रित है।

वैश्विक संवाद से सहयोग करना निःसंदेह हमारे लिए एक बहुत बडा अनुभव तथा खुशी और सम्मान का विषय है। ■

> फ्रांसीसी–भाषायी समाशास्त्र का विश्व में स्थान

आन्द्रे पेतितात, लुजान विश्वविद्यालय, स्विटजरलैण्ड तथा ए.आई.एस.एल.एफ. के अध्यक्ष

जार्ज गुरविच (1894–1965) – रुस में पैदा हुआ अपने समय का यह फ्रैन्च बुद्धिजीवी एवं प्रतिष्ठित समाजशास्त्री AISLF *का एक अग्रणी शख्सियत था।*

फ्रांसीसी–भाषायी समाजशास्त्रियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन – इन्टरनेशनल एसोशियेसन ऑफ फ्रेंच–स्पीकिंग सोश्योलजिस्ट्स) (ए आइ एस एल एफ) की 19वीं कांग्रेस रबात में 2 जुलाई, 2012 से 7 जुलाई, 2012 को 'अनिश्चितता' (अनसर्टेन्टी) विषय पर होगी। ए.आइ.एस.एल.एफ. , जो कि आई एस ए की सदस्य है, की स्थापना 1858 में अमेरिका के सैन्य, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक प्रभुत्व के संदर्भ में हुई। 1950 के दशक से स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने अमेरिका के विश्वविद्यालयों में जाना प्रारम्भ किया। पर इन विश्वविद्यालयों में जाना प्रत्येक की रूचि नहीं थी क्योंकि अमेरिका में प्रकार्यवादी संरूपता एवं सांख्यिकीय आनुभविकता का गहन प्रभाव था, जबकि यूरोप में संघर्ष एवं सामाजिक रूपान्तरण से सम्बद्ध उपागमों का प्रभाव था एवं उनके प्रति संवेदनशीलता थी। ए आइ एस एल एफ से सम्बद्ध एक अग्रणी समाज शास्त्री जार्ज गुरविच ने अपने तरीके से सोरोकिन द्वारा

>>

प्रस्तुत अमरीकी 'टेस्टोमोनिया' (Testomonia) एवं 'क्वैन्टोफ्रानिया' (Quentophrania) की आलोचना विकसित की। हालांकि मैकार्थवाद के प्रति पागलपन की हद तक जुड़ाव 1954 तक लगभग समाप्त हो गया, पर उसके असर को अमेरिकी समाजशास्त्र पर देखा जा सकता है।

अमेरिकन समाजशास्त्र में सैद्धान्तिक एवं विचारधारायी पक्षों से दूरी, इसमें व्याप्त भाषायी एक पक्षीयता वे महत्वपूर्ण कारण थे, जिन्होंने फ्रांसीसी भाषायी समाज शास्त्र को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरने का अवसर दिया। अतः ए.आइ.एस.एल.एफ. वैज्ञानिक राजनीति एवं भाषायी राजनीति का अवलोकित अथवा बाहय परिणाम अथवा कृत्य है। इसका उद्देश्य समाज शास्त्रीय सृजन एवं भाषायी विविधता को एक दूसरे के साथ जोड़ना एवं उनका संरक्षण करना था।

अपने विकास क्रम में ए.आइ.एस.एल.एफ. एक मित्रतापरक अकादमिक समूह से एक ऐसी समिति का रूप ले सका जिसमें पचास से ज्यादा देशों के 1800 सदस्य हैं। यह एक क्षेत्रीय या राष्ट्रीय समिति नहीं है यह तो एक वास्तविक रूप में ऐसी सक्रिय समिति है जिसकी रचना सांस्कृतिक–भाषायी क्षेत्रों को सम्मिलित करती है। इस समिति में विभिन्न देश, राष्ट्रीय क्षेत्र, शैक्षणिक कार्यक्रम व अनु–संधान केन्द्र सम्मिलित हैं जो कि आंशिक रूप में या पूर्ण रूप में फ्रांसीसी भाषी है। इसके अतिरिक्त इस समिति में फ्रांस से एकजुटता रखने वाले वे समाजशास्त्री हैं, जो गैर फ्रांसीसी–भाषायी परिवेश में रहने के कारण पृथक हो गये हैं। इस 'क्षेत्रीय–भाषायी' समिति में 50 से अधिक अत्यन्त सक्रिय विषय केन्द्रित समूह हैं। यह समिति ऑन लाइन पत्रिका 'सोशियोलोजीज' (Sociologies) का प्रकाशन करती है एवं 'रीडाक' (Redoc) (इन्टरनेशनल नैटवर्क ऑफ डाक्टोरल स्कूल्स) के माध्यम से युवा अनुसंधानकर्ताओं के प्रशिक्षण पर ध्यान देती है। 'रीडाक' प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मकालीन स्कूल इस प्रशिक्षण हेतु संचालित करता है। समिति की गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रत्येक 6 माह में प्रकाशित प्रपत्र 'लैटर ड ए.आइ.एस.एल.एफ. (Letter del' AISLF) में प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार हेतु देखें aislf.org.

ए.आइ.एस.एल.एफ. बिना प्रत्यक्ष पक्ष लिये फ्रांसीसी–भाषायी समाजशास्त्र में सक्रिय विचार सम्प्रदायों से सम्बद्ध बहस को अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति प्रदान करता है। इस प्रकार यह (ए. आइ. एस. एल. एफ.) अपने मूल उद्देश्य, जो आज भी समीचीन हैं, अर्थात् समाजशास्त्र में बाहुल्यता को संरक्षण प्रदान करता है। साथ ही अनुसंधान समितियों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की बहसों को प्रोत्साहित करता है। क्षेत्रीय–भाषायी समितियां अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों के लिये अवसर प्रदान करती हैं साथ ही नवीन अवधारणाओं एवं प्रारूपों को विकसित करने का आधार देती हैं। इन अवधारणाओं एवं प्रारूपों के राष्ट्रीय संदर्भ होते हैं। हालांकि इन समितियों की वृद्धि हेतु उपयुक्त क्षेत्रों का कभी कभी संकुचन हो जाता है। इन समितियों के सुसंगत व व्यापक विस्तार हेतु जरूरी हे कि समाजशास्त्रीय विविधताओं को भाषायी निकटता प्राप्त हो। आई. एस. ए. का एक लक्ष्य यह भी है कि उन क्षेत्रों के मध्य वैचारिक संवाद उभरे जो अब तक अधिक महत्व प्राप्त नहीं कर सके। आई. एस. ए. अध्यक्ष बुरावे प्रयास कर रहे हैं कि मुख्य वैश्विक समस्याओं पर व्यापक संवाद विकसित करने के प्रयास हों।

यह स्पष्ट है कि भाषायी क्षेत्र (zones) असमान एवं संस्तरणात्मक है। आज अंग्रेजी का क्षेत्र हर विमर्श के केन्द्र में है। यह नियन्त्रण/एकाधिकार, जो कि बहुस्तरीय परिस्थितियों एवं प्रक्रियाओं का परिणाम है, कदापि इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकता कि भाषायी क्षेत्र, जिसमें फ्रांसीसी–भाषायी क्षेत्र भी सम्मिलित हैं, में भी स्वयं के आन्तरिक संस्तरण एवं असमानतायें विद्यमान हैं। एक सेनेगली अथवा एक मोरक्कन के लिये फ्रांसीसी भाषाओं में चिन्तन एवं लेखन ठीक वैसा नहीं है जैसा कि किसी फ्रांस के व्यक्ति के अथ्वा क्यूबेक के व्यक्ति के लिये। हम भाषायी नियन्त्रण/एकाधिकार एवं इसके असमानता मूलक सम्बन्धों के साथ जुड़ाव को हर जगह महसूस करते हैं।

ए.आइ.एस.एल.एफ की स्थापना का जो संदर्भ था, वह अब बदल चुका है। अमेरिका में समाजशास्त्र अब अधिक विविधतामूलक है। तार्किक कर्ता एवं अन्तः क्रियावाद अमेरिकन समाजशास्त्र के वे दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं जो फ्रांसीसी–भाषायी समाजशास्त्र में भी महत्व पूर्ण हैं। सम्भवतया इन पक्षों की सफलता समाजशास्त्र के उपक्षेत्रों में उभरे छोटे छोटे क्षेत्रों की उपस्थिति से सम्बद्ध है।

हम जानते हैं कि द्विध्रुवीय विश्व (1950–1970) समाप्त हो चुका है और उसे बहु–ध्रुवीय विश्व ने प्रतिस्थापित कर दिया है। हम आज विश्व में जिस विरासत का हिस्सा हैं वह सांस्कृतिक बाहुल्यतावाद के रूप में जानी जाती है। पूर्व में अज्ञात विभिन्न हिस्सों के मध्य वैश्विक अन्तःनिर्भरता, विभिन्न व्यक्तियों के मध्य गतिशीलता में वृद्धि, पूंजी, सूचना एवं उत्पादों के मध्य गतिशीलता में वृद्धि इस विरासत का मुख्य हिस्सा है। हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं जहाँ हमारी प्रौद्योगिकीय एवं वैज्ञानिक शक्ति उस प्रतयेक अनुमान से आगे है जिसकी कल्पना हमारे विषय के प्रवर्त्तकों ने की थी। उदारवादी एवं विनिमय मूलक अर्थप्रणाली एवं प्रौद्योगिकीय–वैज्ञानिक स्वप्न (प्रकृति का रक्षक एवं स्वामी) के डेकार्ट के विचार की इससे सम्बद्धता ने अनेक अस्थिरताओं/अनिश्चितताओं को जन्म दिया है जिनकी उपस्थिति विश्व अर्थव्यवस्था एवं पारिस्थितिकी शास्त्र में देखी जा सकती है। प्रत्येक संकट विश्व में नियमन प्रणाली की नवीन माँग को उत्पन्न कर रहा है ताकि हमारे स्वयं के अन्तः विरोधों एवं समस्याओं की उपेक्षा की जा सके। रबात में आयोजित होने वाली 19वीं कांग्रेस का मुख्य विषय 'अनिश्चितता' (अनसर्टेन्टी) इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमारा विश्वास है कि जिस संकट के दौर में हम वर्तमान में फंस गये हैं, का कोई समाधान मूलक रास्ता निकालने में समाजशास्त्रियों की विशेष भूमिका की इस कांग्रेस से शुरूआत होगी एवं इस पर गहन चर्चा होगी। ■

> लेखागार से ए.आई.एस.एल.एफ. पर कुछ और प्रकाश

जेनिफर प्लाट, ससेक्स विश्वविद्यालय, यू. के. एवं उपाध्यक्ष प्रकाशन, 2010–14

यह नोट आन्द्रे पेतितात् (Andre Petitat) के AISLF का आई. एस.ए. के साथ लंबे रिश्ते के बारे में लेख को कुछ और तथ्यों तथा पृष्ठभूमि की जानकारी से पूर्ण करता है। वह सम्बन्ध जो किसी एक समय पर कुछ आन्तरिक तनावों से परिपूर्ण थे। 1949 में आई.एस.ए. की नींव यूनेस्को, जिसका मुख्यालय हमेशा पेरिस में रहा है, के द्वारा रखी गई थी। इसी कारण यहाँ फ्रेंच भाषा का तथा इसकी औपचारिक प्रस्थिति भी व्यवहारिक महत्व की रही। ऐतिहासिक रूप से भी फ्रेंच अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति की भाषा रही थी। हालाँकि यह विशिष्ट दर्जा, द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यू. एस. ए. के बढ़ते अन्तर्राष्ट्रीय प्रभुत्व के साथ, परिवर्तित हो रहा था। आई.एस.ए. की दो आधिकारिक भाषाएँ–फ्रेंच और अंग्रेजी थीं। महत्वपूर्ण प्रारंभिक समाजशास्त्र के लिये उत्तरदायी अन्य देश, जो युद्ध में फासीवादी रूझान रखते थे, की भाषाओं को छोड़ दिया गया था। जैसे जैसे आई.एस.ए. यूनेस्को से स्वतन्त्र होने लगा था, उसके कार्यों में फ्रेंच का व्यावहारिक रूप से महत्व कम होने लगा था। अभिलेखों के अनुसार, इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप फ्रेंच समाजशास्त्री जार्ज गुरविच (Georges Gurvitch) ने आई.एस.ए. का फ्रेंकोफोन अनुभाग खोलने का प्रस्ताव दिया था। इस प्रस्ताव को अंतर्राष्ट्रीयकरण के लोकाचार को कमतर करने वाला माना गया और यह अस्वीकृत हुआ। अतः 1958 में गुरविच और बेल्जियम समाजशास्त्री हेनरी जेन (Henry Janne) की पहल पर स्वतन्त्र AISLF की स्थापना हुई। हालाँकि 1963 तक यह आई.एस.ए. के साथ एक सामूहिक सदस्य के रूप में जुड़ चुका था। इसमें इस कारण भी मदद मिली क्योंकि आई.एस.ए. के तत्कालीन संयुक्त सचिव गिरोड़ (Girod)] AISLF की कार्यकारिणी के सदस्य भी थे।

आई. एस. ए. की अपनी गतिविधियों के नियमित आँकड़ों को राष्ट्रीय योगदानों के सन्दर्भ में हमेशा देखा गया। परन्तु यदि भौगोलिक स्थान के बजाय भाषा को महत्व दिया जाय तो तस्वीर बदल जाती है। पेतितात के अनुसार, आई.एस.ए. में योगदान देने वाला फ्रांस अकेला फ्रेंकोफोन देश नहीं रहा है; फ्रेंच कनाड़ा, बेल्जियम एवं स्विटजरलैण्ड भी इसमें प्रमुख रहे हैं। 1949 से 1956 तक आई.एस.ए. का अमरीकी अध्यक्ष रहा जबकि एक ही उपाध्यक्ष जार्ज डेवी (Georges Davy), फ्रेंच रहा। 1956–9 में फिर जार्ज फ्रीडमैन (Georges Friedmann) अध्यक्ष बने। इसके बाद एक लंबे अंतराल के बाद 2006–10 के लिए माइकल विवोरका अगले फ्रेंकोफोन अध्यक्ष बनें। इन बीच के वर्षों में कार्यकारिणी में कम से कम एक फ्रेंकोफोन सदस्य अवश्य रहा और ग्यारह कालों में से सात में फ्रेंकोफोन उपाध्यक्ष रहे।

फ्रेंकोफोन परिदृश्य में (अधिकतर द्विभाषी देशों में स्थित) तीन विश्व कांग्रेस का आयोजन (1953, लीग (Leege); 1996 इवियान; 1998 मांट्रियल) एवं मेड्रिड में सचिवालय स्थित होने के पहले तीन सचिवालय (1959–62, लोवेन (Louvain); 1962–67 जेनेवा; 1974–82 मांट्रियल) रहे। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ बड़े विख्यात आई.एस.ए. सदस्य, जो फ्रेंकोफोन राष्ट्रीयता के सदस्य नहीं है, जैसे एनोआर अब्देल–मालेक (Anouar Abdel-Malek), ने या तो कई वर्षों तक पेरिस में नौकरी की या उनके वहाँ मजबूत और स्थायी बौद्धिक सम्पर्क रहे। इसी तरह फ्रेंकोफोन प्रवासी जैसे जैक्वस डोफने (Jacques Dofnee), जो बेल्जियम से क्यूबेक[1] गये, ने महत्वपूर्ण सम्पर्कों का निर्माण किया। अतः हम देख सकते हैं कि भाषाई सम्बन्धों ने कैसे न केवल सम्पर्कों को निर्मित करने में मदद की बल्कि एक अलग पहचान को भी व्यक्त किया। ■

[1]उनकी अत्यधिक रूचिकर भूमिका के लिये देखिये : « Entrevue avec Jacques Dofny, professeur et bâtisseur », Sociologie et sociétés 23 (1991): 61-77.

> भारतीय समाजशास्त्र परिषद के समक्ष चुनौतियां

ईश्वर मोदी, भारतीय समाजशास्त्र परिषद के अध्यक्ष तथा आई.एस.ए. की कार्यकारिणी के सदस्य, 2010–2014

ईश्वर मोदी जयपुर में आई.एस.एस. के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर पवित्र एवं मांगलिक दीप प्रज्वलित करते हुए। तत्कालीन महामहिम राजस्थान के राज्यपाल, आदरणीय एस.के. सिंह (मध्य में) इसे देखते हुए।

भारतीय समाजशास्त्र ने अध्यापन तथा शोध की दृष्टि से प्रशंसात्मक उंचाईयों को प्राप्त किया है। इन उपलब्धियें में भारतीय समाजशास्त्र परिषद (आई.एस.एस.) की अपने अस्तित्व के छः दशकों में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आई.एस.एस. के लगभग 3500 आजीवन सदस्य हैं जो कि भारत में तथा कुछ विदेशों में भी है। भारत में समाजशास्त्र आज चौराहे पर खडा है। हमारे एक शताब्दी पुराने समाजशास्त्रीय पेशे में हाल ही के वर्षों में कुछ चुनौतियां दृष्टिगत हुई हैं। उपनिवेशकालीन विगत अब भी हमारी अध्यापन कला तथा पद्धतिशास्त्र को प्रभावित करता है, तथा हमारे शैक्षणिक प्रयासों पर अब भी अमेरिकन शैक्षणिक सर्वोच्चता का प्रभुत्व कायम है, जिसमें विचारधाराऐं, संदर्भों तथा सिद्धान्तों के निर्माण तथा लेखन शामिल हैं। भारतीय समाजशास्त्र अभी तक सामाजिक सिद्धान्त तथा वैचारिक विकास के क्रम में अपने स्वयं के योगदान को परिभाषित करनें में सफल नहीं हुआ है (मोदी, 2010)।

यदि हम विभिन्न जटिल मुद्दों को सहानुभूति तथा आत्मीयता के साथ समझना चाहते हैं तो तार्किक देशजकरण (rational indigenization) को एक वास्तविकता बनाना ही होगा। हमें प्रासंगिक समाजशास्त्र का विकास करना होगा। मेरी अध्यक्षता में भारतीय समाजशास्त्र के क्षितिज को विस्तृत करने के नए प्रयासों पर विचार विमर्श किया जा रहा है। साथ ही भारतीय समाजशास्त्र को वैश्विक परिदृष्य से अलग नहीं रखा जा सकता। सोशियोलोजिकल बुलेटिन आई.एस.एस. का मुख पत्र है। इसकी आवृतियों को बढाने, इसके कार्यक्षेत्र को विस्तार प्रदान करने, तथा इसे बहुभाषीय बनाना हमारी आवश्यकता है, यदि वास्तविक अर्थों में हम इसे एक अर्न्तराष्ट्रीय स्तर का प्रकाशन बनाना चाहते हैं। हमें इसके विशिष्ठ विषयात्मक अंक निकालने होंगे तथा इसके लिए वरिष्ठ विद्वानों को लेख प्रदान करने के लिए निवेदन किया जा सकता है। हमारी कार्यसूची में एक ई–जर्नल का प्रकाशन भी शामिल है।

सोशियोलोजिकल बुलेटिन की पुर्नःरचना के अलावा विकास, राजनीती का सामाजिक आधार, पहचान के नये आयामों तथा सांस्कृतिक दावों, मध्यम वर्ग का तीव्र गति से विस्तार, समाजिक असमानता, शहरी तथा ग्रामीण विभाजन के बदलते प्रतिमान, तथा इसी प्रकार के अनेक समसामयिक मुद्दों पर एक नई बहस की शुरुआत होनी चाहियें। 21वीं सदी के लिए हमारा उद्धेश्य एक लोक समाजशास्त्र होना चाहिये।

नये लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें ब्राजील, रुस, चीन, तथा दक्षिणी अफ्रीका जैसे देशों से बहुत कुछ सीखना होगा। उत्तर–समाजवाद के समय पर आधारित अपने अनुभवों से पूर्वी यूरोपीय राष्ट्र भी हमें बहुत कुछ प्रस्तुत कर सकते हैं। वैकल्पिक समाजशास्त्र के विकास के लिए हमें पूर्वी देशों, मध्यपूर्व तथा अफ्रीका के समाजों की देशज बौद्धिक परंपराओं (indigenous intellectual traditions) में झाकनें की आवश्यकता है । कहने का तातपर्य है कि हमारा कार्य न केवल पश्चिमी समाजशास्त्र के सकारात्मक पक्षों को बनाए रखना है वरन विकासशील राष्ट्रों के अनुभवों से सीखना भी है। हमें भारतीय समाजशास्त्र की मुख्यधारा तथा भारतीय क्षेत्रीय समाजों तथा संस्कृतियों के मध्य कड़ियां स्थापित करने की आवश्यकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तथा भारत की समृद्ध सामाजिक तथा सांस्कृतिक विविधता का उचित उपयोग करने के लिए आई.एस.एस. को समाजशास्त्र की क्षेत्रीय/सूबाई परिषदों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने होंगे। मैं पूर्णतः आशावादी हूं कि आई.एस.एस. इन सभी दिशाओं में महत्वपूर्ण कदम उठाएगा। ■

Reference

Modi, I. (2010) "Indian Sociology Faces the World." Pp.316-325 in Michael Burawoy, Chang Mau-kuei, and Michelle Fei-yu Hsieh (eds.) *Facing an Unequal World: Challenges for a Global Sociology* (Volume II). Institute of Sociology, Academia Sinica, Taiwan, and Council of National Associations of the International Sociological Association.

> अंकारा विश्वविद्यालय में लोक समाजशास्त्र

गुन्नुर अरटोंग और योन्का ओडाबास, अंकारा विश्वविद्यालय, टर्की

TEKEL *कार्पोरेशन की श्रमिक नीति के विरुद्ध स्थापित टेन्टस् के शहर में गढमढ श्रमिक।*

हम अंकारा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर आयतुल कसापोग्लू के साथ काम करने वाले समाजशास्त्रियों का एक समूह हैं। हमारे समूह में स्नातक छात्र, युवा स्नातकोत्तर छात्र और पूर्ण कालिक शिक्षाविद् सम्मिलित हैं।

हमारा समूह गतिशील है; लोग हमसे अध्ययन हेतु जुड़ते हैं। वे हमारे प्रकाशनों में योगदान देते हैं और इन अनुभवों के साथ अपने शैक्षणिक जीवन को आगे बढ़ाते हैं। ये मुख्य रूप से वे विद्यार्थी हैं जो प्रोफेसर कसापोग्लू के निर्देशन में अपना डाक्टोरल या मास्टर थीसिस लिख रहे हैं। हम सब अपने शोध नेटवर्क के माध्यम से तब भी एक दूसरे से जुड़े रहते हैं जब हम विभाग से अन्य जगह नौकरी करने के कारण दूर हो जाते हैं। आगे के वृतान्त में, मैं हमारे द्वारा शोध से सम्बन्धित प्रकाशित पुस्तकें, प्रोफेसर कसापोग्लू के संगोष्ठी पाठ्यक्रम जहाँ हम अपने क्षेत्रीय शोध को विकसित करते हैं और शोध पत्रिका जिसमें हम अक्सर अपने शोध निष्कर्षों को रिपोर्ट करते हैं, को आपके समक्ष संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करूँगा।

हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तकें आयतुल कसापोग्लू के द्वारा पढ़ाये गये पाठ्यक्रम की सामग्री पर केन्द्रित हैं। सिद्धान्तों और व्यावहारिकता को एकीकृत करते हुए ये पुस्तकें विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के कार्यों पर निर्मित हैं। इन पुस्तकों में से पहली केरेक्टर इन अ चेंजिग सोशल स्ट्रक्चर, सामाजिक संरचना की अत्यावश्यकता के कारण हो रहे चरित्र क्षरण के बारे में है। दूसरी पुस्तक, न्यू सोशल ट्रोमास, सामाजिक आघात के वृतान्त का विवेचन करती है। तीसरी, सोशल लाइफ एण्ड कनफ्लिक्ट : डिफरेण्ट पेनोरमाज, सामाजिक–जीवन और संघर्ष से सम्बन्धित है, जबकि नवीनतम, टू साइडस आफ द काइन : हेल्थ एण्ड इलनेस, स्वास्थ्य और रुग्णता के समाजशास्त्र पर केन्द्रित है। प्रोफेसर कसापोग्लू द्वारा आयोजित संगोष्ठी श्रृंखला विद्यार्थियों को प्रासंगिक साहित्य एवं नये विचारों जिन पर फिर सहभागियों के साथ विमर्श होता है, के सृजन के लिए प्रेरित करती हैं। पढ़ाई खत्म होने के बाद भी पूर्व विद्यार्थी इन पाठ्यक्रमों में भाग लेते रहते हैं जिससे नये सदस्यों को प्रेरणा प्राप्त होती है।

हाल ही में पूरी हुई एक शोध परियोजना में हमारा फोकस दिसम्बर 2009 की TEKEL हड़ताल पर केन्द्रित था। TEKEL तम्बाकू और मादक पेय क्षेत्र का एक बड़ा पूर्व राज्य उद्यम है। तुर्की की राजधानी अंकारा में यह हड़ताल 78 दिन चली। इस हड़ताल का कारण TEKEL के कामगारों की प्रस्थिति में परिवर्तन था। 1990 के दशक में निजीकरण के उदय और सार्वजनिक क्षेत्र में बढ़ती श्रम लागत के कारण सहायक फर्मों में संविदा कर्मचारियों को काम पर रखने का व्यापक चलन हुआ जिसके फलस्वरूप रोजगार सुरक्षा पाने वाले श्रमिकों के प्रतिशत में भारी गिरावट आई।

इस तरह की ''फ्लेक्सीबिलाईजेशन'' (लचीलीकरण) रणनीतियों के प्रति कामगारों का प्रतिरोध सुरक्षा बलों की दमनकारी नीतियों के कारण 14 दिसम्बर, 2009 को अंकारा में शुरू हुआ। ठंडे मौसम और सरकार के प्रत्युत्तर के लंबे इंतजार के फलस्वरूप TEKEL कामगारों ने, जिन सड़कों पर वे विरोध कर रहे थे, को टेंट के शहर में परिवर्तित कर दिया। ये टेंट जनता के आकर्षण के केन्द्र बन गये। सरकार के आधिपत्य के बावजूद, TEKEL के टेंट में रहने वाले कामगारों को वैज्ञानिकों, कलाकारों और विद्यार्थियों से स्थानीय समर्थन प्राप्त हुआ। हर्बट ब्लूमर के भीड़–सक्रियता (Crowd Mobilization) के मॉडल को अपनाते हुए हमारा समूह कामगारों को क्षेत्रीय अनुसंधान से समर्थन दे रहा था। इस कार्य का परिणाम एक शोध पत्र के रूप में आया जो कि यूरोपीयन समाजशास्त्रीय संघ (इ. एस. ए.) की सितम्बर 2011 में जेनेवा में आयोजित बैठक में प्रस्तुत किया गया।

युर्त वे दुन्या (Yurt ve Dunya) – होमलैण्ड एण्ड द वर्ल्ड – एक आनलाइन शोध पत्रिका है जिसका प्रकाशन www.yurtvedunya.net पर 2010 से किया जा रहा है। यद्यपि इस का बहुत लम्बा इतिहास है। युर्त वे दुन्या का प्रकाशन सर्वप्रथम बेहिस बोरान (Behice Boran), मानवीकी संकाय में कार्यरत एक लोक समाजशास्त्री, के नेतृत्व में 1941 में हुआ था। हमने माइकल बुरावे के लोक समाजशास्त्र आंदोलन से प्रेरित हो कुछ स्नातक विद्यार्थियों और समाजशास्त्र के प्रोफेसरों की उर्जा के फलस्वरूप युर्त वे दुन्या को 2010 में पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। इस पत्रिका का उद्देश्य अकादमी में होने वाली शोध से अकादमी के बाहर विभिन्न लोगों के साथ साझा करना है। इस पत्रिका का पहला सार्वजनिक निशाना तुर्की के विभिन्न समाजशास्त्र विभाग के विद्यार्थी हैं।

हम लोग समाजशास्त्र पर हमारे प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक विस्तृत करने की योजना बना रहे हैं। हम सभी आई.एस.ए. और इ.एस.ए. के सदस्य हैं। चूंकि हम क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाजशास्त्रियों के मध्य सहयोग के महत्व में अत्यधिक विश्वास रखते है, हम अपने राष्ट्रीय संघो में भी सक्रिय हैं।

हम सहयोगी शोध संस्कृति के विकास और लोक समाजशास्त्र के उत्पादन/विकास के लिए उत्साहित हैं। यदि आप हमारे कार्य में रूचि रखते हैं या फिर हमारे समूह से संवाद स्थापित करना चाहते हैं तो आप हमसे निम्न पर संपर्क कर सकते हैं:

आयतुल कसापोग्लू kasap@humanity.ankara.edu.tr
योन्का ओडाबास yoncaodabas@yahoo.com
गुन्नुर अरटोंग gertong07@gmail.com

> भविष्यों का लोकतान्त्रिकरण : समानता एवं सहभागिता की खोज

मार्कस एस. शुल्ज, यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनाय, अर्बाना–चैम्पेन, अमेरिका, तथा योकोहामा विश्व कांग्रेस–2014 हेतु बनी आई.एस.ए. कार्यक्रम समिति के सदस्य

ब्यूनस आयर्स के प्लाजा ड मायों की माताएँ। फोटोः मार्कस शुल्ज।

भावी अनुसंधान हेतु आइ. एस. ए. की शोध समिति (आर सी 07) ने 'भविष्यों का लोकतन्त्रीकरण' के लक्ष्य को ध्यान में रखकर ब्यूनस आयर्स में होने वाले फोरम के लिए कार्यक्रमों की शुरूआती की है। इस लक्ष्य को फोरम के सर्वाधिक महत्व पूर्ण अर्थात् मुख्य लक्ष्य 'सामाजिक न्याय एवं लोकतान्त्रीकरण' के साथ जोड़ना शोध समिति का प्रयास है। यह लक्ष्य (अंग्रेजी भाषा के अनुसार) दो अर्थों को व्यक्त करता है। यदि इसे विशेषण की दृष्टि से पढ़े तो 'लोकतान्त्रिक' (डैमोक्रटाइजिंग) इस आशा को व्यक्त करता है कि कुछ भविष्य लोकतान्त्रीकरण को अधिक तीव्र व व्यापक करेंगे। यदि इसे क्रिया की दृष्टि से पढ़े तो 'लोकतान्त्रिक' का अभिप्राय भविष्य की रचना एवं भविष्य की दृष्टि की प्रक्रियाओं को लोकतान्त्रिक रूप प्रदान करना है। भविष्यों के लोकतान्त्रिक रूप का इस दृष्टि से सम्बन्ध न्याय एवं सहभागिता को सामाजिक रूप देने के प्रयासों से है। 'भविष्यों' को यहाँ सउद्देश्य बाहुल्य रूप से प्रस्तुत किया गया है जो सामान्य प्रस्तुति के भिन्न रूप का है। उत्तर–औपनिवेशिक विचारक जैसे आरटुरो एस्को बर, एनीबल वयुजानो, वाल्टर मिगनोलो एवं बोवेन्टुरा डि साउसा सान्टोज का तर्क है कि हमें विविधतामूलक ज्ञान के बाहुल्यतामूलक ज्ञानमीमांसायी पक्ष की आवश्यकता है। प्रभावित करने वाली स्थिति के बावजूद यह वास्तविकता है कि जिस इतिहास को हम जानतें हैं का विवेचन एक रेखीय प्रारूप नहीं कर सकता। बहुआयामी अवधारणायें वास्तव में विवादास्पद एवं अस्पष्ट अवधारणाओं से सदैव उत्तम होती है। भविष्यों का लोकतान्त्रिक रूप वैकल्पिक दृष्टिकोणों के विमर्श को सम्मिलित करता है।

1990 के दशक से भविष्य, ऐसा लगता है कि, थम सा गया है। इस दशक में वाशिंगटन कन्सेन्शस ने विश्व भर के सभी देशों में संरचनात्मक समायोजन के लिए नव्य उदारवादी प्रारूप को महत्व दिया, जिसका घनिष्ठ जुड़ाव संकुचित प्रकृति के बाजार प्रारूप से है। इस

>>

न्यूयार्क के जुकोटी पार्क में ''वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो'' के प्रदर्शनकारी। फोटोः मार्कस शुल्ज।

प्रारूप को हर स्तर से अर्थात् दूर दराज के चियापास के जंगलों से लेकर सिएटल, प्राग, जेनोवा एवं डावोस जैसे नगरों से चुनौती मिली दूसरी और वैश्विक अभिजनों ने बन्द कमरों में अपने सम्मेलनों एवं बैठकों को आयोजित किया। वैश्विक स्तर पर 'आतंक वाद के विरूद्ध युद्ध' के नाम पर भय की राजनीति का उभार हुआ। इस स्थिति ने नव्य उदारवाद का और अधिक विस्तार किया। यह स्थिति जारी रही पर वित्तीय बाजार की अत्यधिक चकाचौंध वाली स्थिति अचानक ध्वस्त हो गयी। यहाँ तक कि मुख्य धारा के मीडिया ने 'पूंजीवाद के विखण्डन' की चर्चा प्रारम्भ कर दी। ये मुख्य समाचार यद्यपि परिपक्व प्रकृति के नहीं थे, अनेक बैंकों को रातोंरात अनेक खरबों डालर की सहायता संकट से उबरने के लिए दी गयी (बेल आउट)। पर इन सब घटनाओं ने सिद्ध कर दिया कि वर्तमान आर्थिक तन्त्र कितनी अनिश्चितताओं व अस्थिरताओं से भरा है। ईराक पर आक्रमण की स्थिति एवं अन्य देशों सहित चीन में हुई तीव्र प्रगति ने अमेरिकन शक्ति को कमजोर किया है। दक्षिण अमेरिकन देशों अर्जेन्टीना से लेकर वेनेजुअला तक तथा ब्राजील से लेकर एक्वाडोर तक ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइ एम एफ) के निर्देशों अथवा विश्व बैंक की शर्तों को अस्वीकृत कर विकास का एक नया रास्ता अपनाया है। अरब देशों में उभरे असन्तोष ने लम्बे दौर से चले आ रहे निरंकुशल शासन को समाप्त कर दिया तथा इस क्षेत्र में लोकतान्त्रीकरण के नवीन अध्याय खुले हैं एवं उन स्थितियों को उपस्थित किया है जो अब अमेरिका में भी उभार ले रही हैं।

वाल स्ट्रीट में उभरा एक छोटा सा विरोध एक राष्ट्रीय आन्दोलन बन गया और उसका असर यूरोप सहित अनेक देशों में हुआ। हालांकि कारपोरेट मीडिया ने इस 'कब्जा करो' आन्दोलन की आलोचना की क्योंकि इस आन्दोलन से किसी भी स्पष्ट माँग का सम्बन्ध नहीं था। साथ ही इसके साथ कोई सुनिश्चित विचार धारा नहीं जुड़ी थी। इस सुनिश्चितता के न होने के कारण अनेक लोग इसके साथ जुड़े तथा इसे समर्थन भी मिला। न्यूयार्क में लिबर्टी स्कवायर (चौक) पर अधिकार देश के अनेक 'स्कवायर्स' (चौकों) पर अधिकारों की तरह ही था, जिसने विचार–विमर्श, तर्क–वितर्क के पक्षों को व्यापक किया। इस स्थिति ने गैर उपजाऊ (जंगली स्थिति की) एवं कम संख्या में आने वाले व्यक्तियों से जुड़े पर कारपोरेट अधिकार वाले जुकाटी पार्क को एक ऐसे सार्वजनिक क्षेत्र/जन क्षेत्र में बदल दिया, जहाँ कला, संगीत, सहभोज, वाचनालय अथवा पुस्तकालय के साथ एक जीवन्त राजनीतिक बहस होती थी कि किसी प्रकार न केवल 1 प्रतिशत सर्वाधिक धनाढ्य अपितु अन्य 99 प्रतिशत लोगों के भविष्य को अच्छा बनाया जाय। स्वयं के द्वारा बनाये गये कार्ड बोर्ड पर चिन्ह एवं नारे एवं उन्हें खुद की तर्कशक्ति से सत्यापित कर लेना, अनेक माँगों एवं प्रस्तावों पर विशिष्ट पक्षों के साथ लम्बी बहस करना, जिसमें न्यायोचित एवं उपयुक्त अर्थ व्यवस्था, स्वच्छ पर्यावरण, कर व्यवस्था में सुधार एवं वित्त कानून जैसे मुद्दे सम्मिलित थे, ने इन आन्दोलनों को वैचारिकी का रूप भी दिया। आन्दोलन के क्षैतिज संगठन (गैर संस्तरण मूलक) ने लोकतन्त्र की पुनः दावेदारी के उद्देश्य को सम्बद्ध कर लिया। 'कब्जा करो' (आक्युपाइ) आन्दोलन ने सामाजिक असमानता के विस्तार एवं राजनीति पर बढ़ रहे कारपोरेटीय (निगमीय) प्रभाव को चुनौती दी। पुलिस के दमन से अमेरिका के सैंकड़ों शहरों में कब्जा किये गये स्थानों को खाली करने में सफलता तो मिल गयी पर सक्रिय कार्यकर्ताओं की एक नयी पीढ़ी ने उभार लिया है जिसे सामूहिक क्रिया करने के प्रारम्भिक अनुभव हैं और अब वह लोकतान्त्रिक भविष्य की व्यापकता के लिए संघर्ष करने और उसकी निरन्तरता बनाये रखने को तैयार है।

अनेक भविष्यों की सम्भावनाओं व स्वरूपों के विषय में समाजशास्त्र इन आन्दोलनों से विचार ग्रहण कर सकता है। आर. सी. 07 द्वारा ब्यूनस आयर्स के फोरम में विभिन्न सत्रों के आयोजन में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के साथ अनेक सवालों पर विमर्श होगा। इस में सम्मिलित कुछ सवाल निम्न हैं : हम अनेक लोकतान्त्रिक भविष्यों को कैसे निर्मित कर सकते हैं? भविष्य के अनुमान एवं भविष्य की आकांक्षायें किस प्रकार दैनिक जीवन की क्रियाओं एवं दीर्घकालिक सामूहिक जीवन को प्रभावित करती हैं? सामाजिक कल्पनाओं (सोश्यल इमेजनरीज) के फलक को कौन से तत्व परिभाषित करते हैं? विकसित वैश्वीकरण के युग में लोकतन्त्र पर पुनः विचार की आवश्यकता को हम कैसे महसूस करते हैं? गम्भीर रूप से प्रभावित करने वाली समस्याओं जैसे पारिस्थितिकीय परिवर्तन, पर्यावरणीय ह्रास, भूख एवं हिंसा को किस प्रकार ऐसे समाधान की ओर ले जायें जो दीर्घकाल तक टिके रहें? शासन, आधारभूत संरचना, उत्पादन मीडिया (संचार) एवं प्रौद्योगिकी को लोकतान्त्रिक बनाने हेतु क्या करना आवश्यक है? वस्तु/उत्पादों, जोखम एवं अवसरों के वितरण को किस प्रकार अधिक समतामूलक बनाया जाय? भविष्य को स्वरूप देने वाली विभिन्न शक्तियाँ किन किन स्थानों पर स्थापित व सक्रिय हैं? विभिन्न देशों में हो रहे सामाजिक संघर्षों एवं पनपी सामाजिक स्थितियों की तुलना से क्या सीखा जा सकता है? मुक्ति आन्दोलन एवं जमीनी स्तर पर दिन प्रतिदिन की क्रियाएं किस प्रकार अनुशासन, शोषण एवं त्रुटिपूर्ण मान्यताओं का प्रतिरोध करती हैं? वैकल्पिक भविष्यों की दृष्टि में कया पक्ष हैं जो काल्पनिक, वांछनीय एवं प्राप्त किये जाने योग्य हैं? सामाजिक रूपान्तरण के रोड मैप्स (दिशा सूचक प्रारूप) क्या हैं? भविष्य अभिमुखन के अनुसंधानों को किस प्रकार व्यापक सार्वजनिक बहसों से सम्बन्धित किया जा सकता है?

अलबर्टो बियलाकोवस्की, अलीसिया पालेरमो, माग्रेट अब्राहम, माइकल बुरावे एवं राकेल सोसा को उनके कठोर श्रम एवं बौद्धिक उत्साह हेतु अनेक धन्यवाद। इन सबके कारण ही अर्जेन्टीना में फोरम सम्भव हो पाया। हमें विश्वास है कि ब्यूनस आयर्स में अनेक विचारोत्तेजक बहसें होंगी एवं ऐसे विमर्श उभरेंगे जो प्रेरणा मूलक साबित होंगे। ■